- 19th Year
- Issue: 207
- 30.11.2025 (SUNDAY)
- ROURKELA
- R.N.I. No. ORIHIN/2006/18978
- (Pages-6)
- Price:2.00

e-paper-www.thekalingasamachar.com

दैनिक
कलिंग समाचार
The kalingasamachar

प्रकाशक एवं संपादक : प्रकाश कुमार धल

Published From ODISHA, JHARKHAND & CHHATTISHGARH

श्रीलंका में ४६ लोगों की मौत पर पीएम मोदी ने व्यक्त की संवेदना, भारत भेजेगा राहत सामग्री

नई दिल्ली २९/११ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चक्रवात दित्वा में मारे गए लोगों के प्रति श्रीलंका के प्रति संवेदना व्यक्त की और प्रभावित परिवारों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। उन्होंने कहा कि भारत ने ऑपरेशन सागर बंधु के तहत तत्काल राहत भेजी है और आगे भी सहायता प्रदान करने के लिए तैयार है। भारतीय मौसम विभाग ने शुक्रवार को बताया कि चक्रवाती तूफान दित्वा इस समय श्रीलंका के तटीय क्षेत्र और उससे सटे दक्षिण–पश्चिम बंगाल की खाड़ी के ऊपर से गुजर रहा है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (प्डक) के अनुसार, यह उत्तर– उत्तर– पश्चिम की ओर बढ़ रहा है और 30 नवंबर की सुबह तक तमिलनाडु और दक्षिणी आंध्र प्रदेश के तटों के करीब पहुँचने की उम्मीद है।28 नवंबर को सुबह 8रू30 बजे (भारतीय समयानुसार) यह तूफान 8.3 उत्तर और 81. 0पूर्व के बीच त्रिंकोमाली से लगभग 40 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम और श्रीलंका में बट्टिकलोआ से 100 किलोमीटर उत्तर–पश्चिम में स्थित था। भारत की ओर, यह कराईकल से 320 किलोमीटर दक्षिण–दक्षिणपूर्व, पुडुचेरी से 430 किलोमीटर दक्षिण–दक्षिणपूर्व और चेन्नई से 530 किलोमीटर दक्षिण में था। तूफान के आगे बढ़ने को देखते हुए, मौसम विभाग ने पूरे तमिलनाडु में अलर्ट जारी कर दिया है। क्षेत्रीय मौसम विभाग ने तंजावुर, तिरुवरुर, नागपट्टिनम और मयिलादुथुराई सहित कावेरी डेल्टा के कुछ जिलों में 30 नवंबर तक रेड अलर्ट जारी किया है। चक्रवाती तूफान के नजदीक आने पर पुडुचेरी बंदरगाह पर चक्रवात चेतावनी संकेत संख्या 2 फहराया गया। पीटीआई की रिपोर्ट के अनुसार, समुद्र की स्थिति अभी भी खराब बनी हुई है, तट पर तेज लहरें और तेज हवाएँ चल रही हैं। उत्तरी तमिलनाडु और पुडुचेरी तथा उससे सटे दक्षिणी आंध्र प्रदेश के तटों के लिए चक्रवात की चेतावनी जारी की गई है। अधिकारियों ने तटीय निवासियों को सतर्क रहने की सलाह दी है क्योंकि यह तूफान तेज होकर भारतीय तटरेखा के पास पहुँच रहा है। रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार, चक्रवात के लगातार तेज होने के कारण कम से कम 46 लोगों की मौत हो गई है और 23 अन्य लापता हैं। मौसम विभाग ने शुक्रवार को चेतावनी दी थी कि अगले 12 घंटों में द्वीप पर आगे बढ़ने के साथ ही यह तूफान और भी तेज हो सकता है। आपदा प्रबंधन केंद्र (डीएमसी) ने एक बयान में कहा कि देश भर में 43,991 लोगों को स्कूलों और अन्य सार्वजनिक आश्रय स्थलों में पहुँचाया गया है। देश भर में स्कूल बंद रहे, रेल सेवाएँ निलंबित रहीं और कोलंबो स्टॉक एक्सचेंज ने समय से पहले कारोबार बंद करने की घोषणा की।

मौलाना मदनी की सुप्रीम कोर्ट और सरकार को सीधी धमकी

नई दिल्ली २९/११ (संवाददाता): जमीयत उलेमा –ए –हिंद के अध्यक्ष महमूद मदनी ने न्यायपालिका और सरकार पर अल्पसंख्यकों के अधिकारों का हनन करने का आरोप लगाते हुए कहा कि अगर अत्याचार होगा, तो जिहाद होगा॰ कहकर विवाद खड़ा कर दिया। उनकी इस टिप्पणी पर भाजपा ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है और उन पर मुसलमानों को भड़काने और संवैधानिक संस्थाओं को चुनौती देने का आरोप लगाया है। मदनी ने आरोप लगाया कि बाबरी मस्जिद और तीन तलाक के मामलों सहित हाल के अदालती फैसलों से पता चलता है कि न्यायपालिका ष्सरकारी दबाव में॰ काम कर रही है। उन्होंने दावा किया कि हाल के वर्षों में ष्ऐसे कई फैसले॰ सामने आए हैं जिन्होंने संविधान में अल्पसंख्यकों को दिए गए अधिकारों का खुलेआम उल्लंघन किया है।उपासना स्थल अधिनियम, 1991 के बावजूद चल रहे मुकदमों का हवाला देते हुए, मदनी ने कहा कि इस तरह के घटनाक्रम संवैधानिक विचलन को उजागर करते हैं। उन्होंने कहा, ष्सुप्रीम कोर्ट तभी तक श्सर्वोच्चश कहलाने का हकदार है जब तक वहाँ संविधान की रक्षा होती है। उन्होंने आगे कहा कि अगर ऐसा नहीं होता है, तो यह गैर–अवशेष अवस्था में भी सर्वोच्च कहलाने का हकदार नहीं है। मदनी ने भारत में मुसलमानों के प्रति जनभावना का भी आकलन किया और बताया कि 10 प्रतिशत लोग उनके समर्थक हैं, 30 प्रतिशत उनके खध्लिाफ हैं, जबकि 60 प्रतिशत लोग चुप हैं। उन्होंने मुसलमानों से इस खामोश बहुसंख्यक समुदाय के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने का आग्रह किया। उन्हें अपने मुद्दे समझाएँ। अगर ये 60 प्रतिशत लोग मुसलमानों के खध्लिाफ हो गए, तो देश में बहुत बड़ा खध्तरा पैदा हो जाएगा। सार्वजनिक चर्चा में जिहाद को जिस तरह से पेश किया जाता है, उस पर आपत्ति जताते हुए मदनी ने मीडिया और सरकार पर एक पवित्र अवधारणा को विकृत करने का आरोप लगाया। उन्होंने लव जिहाद, थूक जिहाद और भूमि जिहाद जैसे लेबलों के इस्तेमाल की आलोचना करते हुए कहा कि ये सही अर्थ को गलत तरीके से प्रस्तुत करते हैं।

संसद का शीतकालीन सत्र एक से

नई दिल्ली २९/११ (संवाददाता): संसद का तीन सप्ताह लंबा शीतकालीन सत्र सोमवार, 1 दिसंबर से शुरू होगा, जिसमें विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) और वंदे मातरम पर चर्चा होगी, और परमाणु ऊर्जा तथा उच्च शिक्षा से संबंधित विधेयकों पर विधायिका का ध्यान केंद्रित रहने की उम्मीद है। सरकार शीतकालीन सत्र की शुरुआत वंदे मातरम पर पूरे दिन की चर्चा के साथ करना चाहती है क्योंकि देश इस राष्ट्रीय गीत के 150 वर्ष पूरे होने का जश्न मना रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 1937 में इस गीत से महत्वपूर्ण छंदों को हटाने के कारण भारत के विभाजन का कारण बनने का आरोप लगाए जाने के बाद, इस सत्र का उद्देश्य राष्ट्रीय गीत के पूर्ण पाठ पर चर्चा करना है। प्रधानमंत्री ने 7 नवंबर को कहा था कि 1937 में, श्वंदे मातरमश के महत्वपूर्ण छंद, जो इसकी मूल भावना हैं, हटा दिए गए। श्वंदे मातरमश के छंदों को खंडित कर दिया गया। इस निष्कासन ने अंततः देश के विभाजन के बीज बोए। आज की पीढ़ी को यह समझने की जरूरत है कि राष्ट्र निर्माण के इस महान मंत्र के साथ ऐसा अन्याय क्यों किया गया। क्योंकि वही विभाजनकारी मानसिकता आज भी राष्ट्र के लिए एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। अधिकारियों का कहना है कि इसका उद्देश्य युवाओं को वंदे मातरम के इतिहास और स्वतंत्रता आंदोलन में इसकी भूमिका की याद दिलाना है। लोकसभा अध्यक्ष और राज्यसभा के सभापति दोनों द्वारा सभी दलों से इसमें शामिल होने का आग्रह करने की उम्मीद है, और इस बात पर जोर दिया जाएगा कि वंदे मातरम एक साझा राष्ट्रीय प्रतीक बना हुआ है जिसे पहले ही प्रत्येक संसद सत्र के अंत में गाया जाता है।

लाल किला विस्फोट के चार आरोपी १० दिन की एनआईए की हिरासत में

नई दिल्लीं २९/११ (संवाददाता): दिल्ली लाल किला विस्फोट मामले में एनआईए ने चार और मुख्य आरोपियों, डॉ. मुजम्मिल गनई, डॉ. अदील राठेर, डॉ. शाहीन सईद और मुफ्ती इरफान अहमद वागे को गिरफ्तार कर 10 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा है, जिससे गिरफ्तारियों की कुल संख्या छह हो गई है। पटियाला हाउस कोर्ट स्थित राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (एनआईए) की विशेष अदालत ने शनिवार को दिल्ली विस्फोट मामले में पुलवामा (जम्मू–कश्मीर) निवासी डॉ. मुजम्मिल शकील गनई, अनंतनाग (जम्मू–कश्मीर) निवासी डॉ. अदील अहमद राथर, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) निवासी डॉ. शाहीन सईद और शोपियां (जम्मू–कश्मीर) निवासी मुफ्ती इरफान अहमद वागे की एनआईए हिरासत 10 दिनों के लिए बढ़ा दी।

मानव को और अच्छा बनाने के लिए हो एआई का इस्तेमाल-मोहन भागवत

नागपुर २९/११ (संवाददाता): राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने शनिवार को नागपुर पुस्तक मेले में लेखकों और उपस्थित लोगों को संबोधित किया, जिसमें उन्होंने प्रौद्योगिकी पर मानव नियंत्रण, भारतीय लोकाचार में निहित प्रामाणिक राष्ट्रवाद और वैश्विक परिवर्तन के बीच सांस्कृतिक संरक्षण पर जोर दिया। मोहन भागवत ने एआई के उदय के साथ खुद को श्मशीनश बनने से आगाह किया और जोर देकर कहा कि तकनीक को रोका नहीं जा सकता, बल्कि मानवता की बेहतरी के लिए काम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम इसके मालिक बने रहें, इसकी सीमाएँ तय करें–मोबाइल को एक उपकरण की तरह इस्तेमाल करें, उन्हें हमें इस्तेमाल न करने दें। उन्होंने उस लत का हवाला दिया जिसमें लोग घंटों बिना उपकरणों के रहते हैं। सच्चा एआई भावनाओं को चुनौती देता है, शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा को शामिल करते हुए संतुलित जीवन के लिए तैयारी की माँग करता है। ज्ञान को अपरिष्कृत आँकड़ों और गहन समझ या श्बोधश, दोनों के रूप में परिभाषित करते हुए, मोहन भागवत ने भारतीय भाषाओं से सटीक भावनात्मक अभिव्यक्ति का आग्रह किया, जो अंग्रेजी या विदेशी भाषाओं में नहीं है। वैश्वीकरण, अगर अनुवाद न किया जाए, तो भावनाओं को कमजोर कर देता है, जिससे सांस्कृतिक क्षति का खध्तरा पैदा होता है क्योंकि लेखकों को मूल भावों को संरक्षित रखना होता है। भागवत ने स्पष्ट किया कि आरएसएस का श्राष्ट्रवादश आक्रामक पश्चिमी श्राष्ट्रवादश से अलग है, जो विश्व युद्धों को हवा देने वाले अहंकार से उपजा हैय भारत का श्राष्ट्रश अहंकार के विघटन से उभरा है, जो बिना संघर्ष के एकता को बढ़ावा देता है। ष्हम भारत माता के पुत्र होने के नाते भाई हैं–धर्म, भाषा या रीति–रिवाजों से परे,॰ संघर्ष के बजाय समन्वय को बढ़ावा देते हैं। यूक्रेन–रूस युद्ध, हमास–इजराइल तनाव और अमेरिका–चीन शीत युद्ध के बीच वर्तमान श्वैश्वीकरणश एक मिथक हैय इसके प्रवर्तकों ने 2005 में स्वीकार किया था कि यह सभी को एक ही ढाँचे में ढालने में विफल रहा। सच्चा वैश्वीकरण पारस्परिक कल्याण के लिए सांस्कृतिक परंपराओं के साथ जुड़ता है।

सात दिन के लिए बढ़ी गैंगस्टर अनमोल विश्नोई की कस्टडी

नई दिल्लीं २९/११ (संवाददाता): राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (एनआईए) ने जेल में बंद गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के भाई और अंतरराष्ट्रीय गैंगस्टर अनमोल बिश्नोई की हिरासत अवधि 7 दिन और बढ़ा दी है। गंभीर सुरक्षा चिंताओं के चलते, एनआईए जज ने सुनवाई के लिए खुद एनआईए मुख्यालय का दौरा किया। अधिकारियों ने बताया कि अनमोल बिश्नोई की सुरक्षा को संभावित खतरे के चलते जज ने सुनवाई अदालत से एनआईए कार्यालय स्थानांतरित कर दी। विशेष सुनवाई एनआईए मुख्यालय के एक सुरक्षित हिस्से में हुई। सुनवाई के बाद, अदालत ने आदेश दिया कि अनमोल बिश्नोई 5 दिसंबर तक एनआईए की हिरासत में रहेगा क्योंकि जाँचकर्ता उससे चल रहे मामलों में पूछताछ जारी रखेंगे। नवंबर में दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट ने बिश्नोई को 11 दिन की एनआईए हिरासत में भेज दिया था।

एनआईए की ओर से अधिवक्ता कुशदीप गौड़ के साथ पेश हुए विशेष लोक अभियोजक राहुल त्यागी ने अदालत में बिश्नोई अपराध सिंडिकेट में अनमोल की संदिग्ध भूमिका का जिक्र किया। नेटवर्क का एक प्रमुख सदस्य, अनमोल, 2022 से फरार था और अपने जेल में बंद भाई लॉरेंस बिश्नोई के नेतृत्व वाले आतंकी गैंगस्टर सिंडिकेट से जुड़े मामले में गिरफ्तार होने वाला उन्नीसवाँ आरोपी है।

अनमोल जेल में बंद गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई का छोटा भाई है, जिस पर जेल से एक वैश्विक आपराधिक गिरोह चलाने का आरोप है।

नौसेना भारत के भविष्य की रक्षक-सीडीएस चौहान

नई दिल्ली २९/११ (संवाददाता): चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान ने शनिवार को भारतीय नौसेना अकादमी, एझिमाला से पासआउट हुए नवनियुक्त नौसेना अधिकारियों को संबोधित किया और इस बात पर प्रकाश डाला कि भारतीय नौसेना भारत के भविष्य को सुरक्षित करने और राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए सैन्य शक्ति के किसी भी भविष्य के प्रयोग में निर्णायक भूमिका निभाने के लिए तैयार है। सीडीएस जनरल अनिल चौहान ने अपने संबोधन के दौरान कहा कि अतीत में कई मौकों पर, मैंने कहा है कि भारत एक महाद्वीपीय और एक समुद्री शक्ति है। लेकिन भारत का अंतिम भाग्य महासागरों में ही निहित है। और इसमें, भारतीय नौसेना इस भाग्य को सुरक्षित करने में निर्णायक भूमिका निभाएगी। अनिल चौहान ने कहा कि मेरा मानना है कि यह पूर्वनिर्धारित है। वह यह है कि भारतीय नौसेना हमारे राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए सैन्य शक्ति के किसी भी भविष्य के प्रयोग में निर्णायक भूमिका निभाएगी। नए भर्ती हुए अधिकारियों को सलाह देते हुए, उन्होंने उन्हें याद दिलाया कि अक्षमता की कीमत जान देकर चुकाई जाती है और उन्हें पेशेवर उत्कृष्टता की ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि यह आपके लिए कोई विकल्प नहीं है। यह एक दायित्व है। पेशेवर उत्कृष्टता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पूर्ण रखें ताकि शांति के समय आप तैयार रहें और युद्ध में आप विजयी हों।अपनी सेवा के शुरुआती दिनों के बारे में बात करते हुए, उन्होंने कहा कि पहले सैन्य रणनीति भौगोलिक विचारों से प्रेरित होती थी, लेकिन अब तकनीक ने इसे कम प्रासंगिक बना दिया है। उन्होंने कहा, ष्जब मैं सेवा में शामिल हुआ था, तब सैन्य रणनीति मुख्यतः भौगोलिक विचारों से प्रेरित होती थी। आज, तकनीक ने भूगोल को पीछे छोड़ दिया है, जिससे यह कम प्रासंगिक हो गया है। अधिकांश सैन्य रणनीति, संचालन कला और यहाँ तक कि छोटी–छोटी रणनीतियों को भी तकनीक ही संचालित करती है।

सीडीएस जनरल चौहान ने यह भी उल्लेख किया कि आज के समय में, सशस्त्र बलों के बीच एकीकरण और अंतर–संचालनीयता भविष्य के युद्धों में निर्णायक कारक होंगे। उन्होंने कहा, ष्भविष्य के सभी युद्ध एकीकृत तरीके से लड़े जाएँगे। एकजुटता ही वह मंत्र है जो हम सभी को सफल बनाएगा। हम इसी के अनुरूप तीनों सेनाओं के बीच एकजुटता और एकीकरण को बढ़ावा दे रहे हैं।॰ इससे पहले, आज भारतीय नौसेना अकादमी (आईएनए), एझिमाला ने शरदकालीन सत्र के लिए अपनी पासिंग आउट परेड (पीओपी) का आयोजन किया, जो एक गहन और परिवर्तनकारी प्रशिक्षण व्यवस्था के समापन का प्रतीक है, क्योंकि कैडेट भारतीय नौसेना, भारतीय तटरक्षक बल और मित्र विदेशी नौसेनाओं में अधिकारी के रूप में शामिल होने की तैयारी कर रहे हैं। सीडीएस जनरल अनिल चौहान ने परेड की समीक्षा की तथा उन प्लाटूनों का निरीक्षण किया जो भारतीय नौसेना, तटरक्षक बल और विश्व भर में अन्य मित्र विदेशी नौसेनाओं में सेवा देने के लिए तैयार हैं।

विविध समाचार

बांग्लादेशी घुसपैठियों की इतनी ही परवाह है तो अपने घरों में जगह दो...सैयदा हमीद पर भड़के असम के सीएम

गुवाहाटी २९/११ (संवाददाता): असम के मुज़्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने सोमवार को योजना आयोग की पूर्व सदस्य सैयदा हमीद की उस टिप्पणी पर निशाना साधा जिसमें उन्होंने सुझाव दिया था कि बांग्लादेशी भारत में रह सकते हैं। उन्होंने उन पर राज्य में अवैध घुसपैठियों को वैध ठहराने का आरोप लगाया। मुज़्यमंत्री ने ज़ोर देकर कहा कि असम में बांग्लादेशियों का स्वागत नहीं है और कहा कि जो लोग उनसे सहानुभूति रखते हैं, वे उन्हें अपने घर में जगह दे सकते हैं। एज़्स पर एक पोस्ट में, सरमा ने लिखा कि गांधी परिवार की करीबी विश्वासपात्र सैयदा हमीद जैसे लोग अवैध घुसपैठियों को वैध ठहराते हैं,

ज़्योंकि वे असम को पाकिस्तान का हिस्सा बनाने के जिन्ना के सपने को साकार करना चाहते हैं। आज, उनके जैसे लोगों के मौन समर्थन के कारण असमिया पहचान विलुप्त होने के कगार पर है। लेकिन हम लचित बरफुकन के बेटे और बेटियाँ हैं, हम अपने राज्य और अपनी पहचान को बचाने के लिए अपने खून की आखिरी बूंद तक लड़ेंगे। उन्होंने आगे लिखा कि मैं यह स्पष्ट कर दूँ कि असम में बांग्लादेशियों का स्वागत नहीं है, यह उनकी ज़मीन नहीं है। उनसे सहानुभूति रखने वाला कोई भी उन्हें अपने घर में जगह दे सकता है। असम अवैध घुसपैठियों के कज़्ज़े में नहीं है, न अभी, न कभी। यह टिप्पणी असम सिविल सोसाइटी और अन्य सामाजिक समूहों द्वारा आयोजित एक जनसभा के एक दिन बाद आई है, जिसे हर्ष मंदर, प्रशांत भूषण और अन्य गणमान्य लोगों ने संबोधित किया था। उस बैठक में, कुछ पत्रकारों ने सैयदा हमीद की एक बाइट ली, जिसमें उन्होंने वे टिप्पणियाँ कीं जिनकी आलोचना हुई।

सैयदा हमीद की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देते हुए, असम के मंत्री पीयूष हजारिका ने कहा कि घुसपैठियों को राज्य छोड़ना होगा और कांग्रेस रोती रह सकती है। असम के मंत्री पीयूष हजारिका द्वारा साझा किए गए वीडियो में, सैयदा हमीद कहती नज़र आईं, बांग्लादेशी होने में ज़्या ग़लत है? बांग्लादेशी भी इंसान हैं, और दुनिया इतनी बड़ी है कि वे यहाँ (भारत) रह सकते हैं, वे किसी को उनके अधिकारों से वंचित नहीं कर रहे हैं... यह कहना कि वे किसी को उनके अधिकारों से वंचित कर रहे हैं, परेशान करने वाला, बेहद शरारती और मानवता के लिए हानिकारक है।

मंत्री ने एज़्स पर एक पोस्ट में कहा कि जमीयत के बाद, ज़्या असम में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक और प्रमुख रणनीतिकार को आयात किया है? यूपीए काल की योजना आयोग की सदस्य मैडम सैयदा हमीद से मिलिए। वह गुवाहाटी आती हैं और कहती हैं, बांग्लादेशी आए तो ज़्या हुआ... मैडम -- घुसपैठियों को असम छोड़ना होगा। कांग्रेसी रोते रह सकते हैं।

भारत-पाक मैच कोई मुद्दा नहीं, विपक्ष को महत्वपूर्ण मुद्दे उठाने चाहिए-अजित पवार

मुंबई २९/११ (संवाददाता): महाराष्ट्र के उपमुज़्यमंत्री अजित पवार ने शनिवार को कहा कि विपक्ष को भारत-पाकिस्तान क्रिकेट मैच जैसे गैरजरूरी मुद्दों पर बोलने के बजाय भारी बारिश से हुई फसल क्षति और यातायात जाम जैसे अहम मुद्दे उठाने चाहिए। वह शिवसेना (उबाठा) सांसद संजय राउत की उस आलोचना पर प्रतिक्रिया दे रहे थे जिसमें राउत ने पहलगाम आतंकी हमले की पृष्ठभूमि में एशिया कप में भारतीय टीम को पाकिस्तान के साथ खेलने की केंद्र सरकार की अनुमति पर सवाल उठाया था। अजित पवार ने कहा, ''कुछ लोगों का मानना है कि भारत को पाकिस्तान जैसे प्रतिद्वंद्वी से कोई

संबंध नहीं रखना चाहिए, ज़्योंकि वह हमारे देश में आतंकवादी गतिविधियों के लिए जिज़्मेदार है। वहीं, एक वर्ग ऐसे मैच को उत्साह से देखता है। जहां तक विपक्ष का सवाल है, उसे महत्वपूर्ण मुद्दे उठाने चाहिए। उन्होंने कहा, ''आज कई अहम विषय हैं जैसे भारी वर्षा, फसल का नुकसान और यातायात जाम लेकिन विपक्ष के सदस्य भारत-पाकिस्तान मैच जैसे गैरजरूरी मुद्दों पर बोलते हैं।'' उपमुज़्यमंत्री ने यह भी कहा कि वोट चोरी के आरोपों में कोई दम नहीं है। उन्होंने कहा, ''विपक्ष फर्जी विमर्श गढ़ने की कोशिश कर रहा है, लेकिन इसमें सफल नहीं होगा।

महबूबा ने यूएपीए के तहत जेल में बंद कैदियों की रिहाई की मांग की, उमर अज़्दुल्ला ने दे दी यह सलाह

श्रीनगर २९/११ (संवाददाता):जज़्मू-कश्मीर पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की प्रमुख महबूबा मुज़्ती ने सोमवार को मुज़्यमंत्री उमर अज़्दुल्ला से केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मिलने और गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) के तहत गिरज़्तार जज़्मू-कश्मीर के लोगों की रिहाई पर चर्चा करने का आग्रह किया। महबूबा मुज़्ती ने यूएपीए के तहत जेल में बंद कैदियों की रिहाई की मांग को लेकर श्रीनगर में विरोध प्रदर्शन किया और जेल नहीं, ज़मानत चाहिए% का नारा लगाया।

पत्रकारों से बात करते हुए महबूबा मुज़्ती ने कहा कि हम आज जज़्मू-कश्मीर और अन्य जगहों पर जेल में बंद निर्दोष लोगों, खासकर उन लोगों के लिए विरोध प्रदर्शन करना चाहते थे जिनके माता-पिता मुकदमा लड़ने में सक्षम नहीं हैं। हम मांग करना चाहते थे कि उमर अज़्दुल्ला गृह मंत्री से बात करें। पीडीपी प्रमुख ने कहा कि अगर कैदियों को रिहा नहीं किया जा सकता, तो उन्हें स्थानीय

स्तर पर, जज़्मू-कश्मीर में ही जेल में डाल दिया जाना चाहिए, ज़्योंकि उनके परिवार अदालतों में उनके मुकदमे लड़ते हुए कष्ट झेलते हैं।

महबूबा मुज़्ती ने कहा कि अगर निर्दोषों को रिहा नहीं किया जा सकता, तो उन्हें कम से कम जज़्मू-कश्मीर में ही जेल में डाल दिया जाना चाहिए... गरीब लोग अदालत नहीं जा सकते। जब वे बीमार होते हैं तो उनकी देखभाल कौन करता है? उनकी बात कौन सुनेगा? यह राजनीति का मामला नहीं है; यह मानवता का मामला है। उन्होंने मुज़्यमंत्री अज़्दुल्ला से केंद्र शासित प्रदेश के बाहर की जेलों में यूएपीए के तहत बंद जज़्मू-कश्मीर के लोगों तक पहुँचने के लिए एक टीम गठित करने का अनुरोध किया। मुज़्ती की मांगों का जवाब देते हुए मुज़्यमंत्री उमर अज़्दुल्ला ने कहा कि उन्हें सीधे केंद्रीय मंत्री अमित शाह के सामने अपनी मांगें रखनी चाहिए। मुज़्यमंत्री ने कहा कि हम सभी इसे लेकर चिंतित हैं। लेकिन श्रीनगर में विरोध प्रदर्शन करने से कोई फायदा नहीं होने वाला। जज़्मू-कश्मीर की सुरक्षा से जुड़े फैसले दिल्ली में गृह मंत्रालय लेता है। उन्हें दिल्ली जाकर गृह मंत्री से मिलना चाहिए और अपनी बात उनके सामने रखनी चाहिए, जैसा हमने किया। लेकिन अगर वह दिखावे के लिए यहां विरोध प्रदर्शन करना चाहती हैं, तो कर सकती हैं। किसी को इससे कोई आपज़ि नहीं है।

डबल इंजन की सरकार के बावजूद राजस्थान रिफाइनरी का काम धीमा-अशोक गहलोत

नयी दिल्ली २९/११ (संवाददाता):राजस्थान के पूर्व मुज़्यमंत्री अशोक गहलोत ने पचपदरा में प्रस्तावित राजस्थान रिफाइनरी के कार्य की धीमी गति को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार पर निशाना साधते हुए सोमवार को सवाल किया कि 'डबल इंजन' की सरकार होने के बावजूद रिफाइनरी का काम धीमा ज़्यों है?गहलोत ने कहा कि राज्य की भाजपा सरकार ने 2025-26 की बजट घोषणा संज़्या 158 में यह कहा था कि पचपदरा-बालोतरा स्थित रिफाइनरी अगस्त 2025 से उत्पादन शुरू कर देगी। उन्होंने 'एज़्स' पर पोस्ट कर कहा, ''कल मुज़्यमंत्री भजनलाल शर्मा और केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने रिफाइनरी का दौरा किया, परंतु दोनों के बयानों और सरकारी प्रेस नोट में रिफाइनरी के उत्पादन शुरू होने की तारीख का कोई जिक्र नहीं था। यह आश्चर्यजनक चुप्पी जनमानस में संदेह उत्पन्न कर रही है।''

गहलोत के अनुसार, कांग्रेस सरकार के कार्यकाल के दौरान, कोरोना महामारी के बावजूद रिफाइनरी का काम तेजी से हुआ और 80 प्रतिशत से अधिक कार्य पूरा कर लिया गया था।

उन्होंने आरोप लगाया कि 2013 से 2018 और अब 2023 से भाजपा सरकार की लापरवाही के कारण 37,000 करोड़ की इस परियोजना की लागत बढ़कर लगभग एक लाख करोड़ तक पहुंच गई है।

उन्होंने कहा, ''2013 में जब इस परियोजना का शिलान्यास हुआ था, तब सरकार बदलने के बाद इसका काम रोका नहीं गया होता तो लागत इतनी नहीं बढ़ती। अब राजस्थान की जनता पूछ रही है कि 'डबल इंजन' की सरकार के बावजूद रिफाइनरी का काम धीमा ज़्यों चल रहा है?''

केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी और मुज़्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार को बालोतरा जिले के पचपदरा में बन रही एचपीसीएल राजस्थान रिफाइनरी लिमिटेड (एचआरआरएल) का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने कुछ उद्घाटन कार्य किए और एक समीक्षा बैठक भी की।

झूठे मामले में फंसाया गया, जेल से सरकार चला, अरविंद केजरीवाल ने अमित शाह पर साधा निशाना

नयी दिल्ली २९/११ (संवाददाता): दिल्ली के पूर्व मुज़्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पर पलटवार करते हुए कहा कि एक मुज़्यमंत्री द्वारा जेल से सरकार चलाने के औचित्य पर सवाल उठाने पर उन्हें केंद्र द्वारा गढ़े गए एक मामले में जेल में डाला गया है। शराब नीति घोटाला मामले में गिरज़्तार होने के बाद सरकार चलाने वाले केजरीवाल ने भाजपा मंत्री पर निशाना साधते हुए कहा कि जहां निर्दोष लोगों को झूठे आरोपों में जेल भेजा जाता है, वहीं गंभीर अपराधों में शामिल लोगों को अगर भगवा पार्टी से संबंधित हैं तो मंत्री बना दिया जाता है। केजरीवाल ने ट्वीट करते हुए कहा कि राजनीतिक साजिश के तहत जब केंद्र सरकार ने मुझे झूठे मामले में फंसाया और जेल भेज दिया, तो मैंने जेल से 160 दिनों तक सरकार चलाई। उन्होंने समाचार एजेंसी एएनआई के साथ अमित शाह के साक्षात्कार का एक वीडियो साझा किया, जिसमें उन्होंने नए विधेयक का बचाव किया,

जिसमें गंभीर आपराधिक आरोपों में लगातार 30 दिनों तक हिरासत में रखे गए मंत्रियों को हटाने की बात कही गई है। शाह ने पूछा कि भ्रष्टाचार के आरोपी या पाँच साल से ज़्यादा की सज़ा वाले आरोपों का सामना कर रहे लोगों के लिए, ऐसे मंत्रियों, मुज़्यमंत्रियों या प्रधानमंत्रियों का जेल में बैठकर सरकार चलाना कितना उचित है? दिल्ली के पूर्व मुज़्यमंत्री ने जवाब देते हुए पूछा, 卐ज़्या एक ऐसे व्यक्ति को भी अपने पद से इस्तीफ़ा देना चाहिए जो गंभीर अपराधों के अपराधियों को अपनी पार्टी में शामिल करता है, उनके सभी मामले खारिज करवाता है और उन्हें मंत्री, उपमुज़्यमंत्री या मुज़्यमंत्री बनाता है? केजरीवाल ने आगे सवाल किया, अगर किसी को झूठे मामले में फंसाया जाता है, जेल भेजा जाता है और बाद में बरी कर दिया जाता है, तो उसे झूठे मामले में फंसाने वाले मंत्री को कितने साल की कैद की सजा मिलनी चाहिए? केजरीवाल को पिछले साल मार्च में प्रवर्तन निदेशालय ने आबकारी नीति से जुड़े एक मनी लॉन्ड्रिंग मामले में गिरज़्तार किया था। इस तरह वे हिरासत में लिए जाने वाले पहले मौजूदा मुज़्यमंत्री बने। इस्तीफा देने के बजाय, आप संयोजक ने सरकार चलाना जारी रखा और जमानत मिलने के बाद ही इस्तीफा दिया। रेखा गुप्ता के नेतृत्व वाली मौजूदा भाजपा सरकार पर निशाना साधते हुए, केजरीवाल ने कहा कि जब वे जेल से प्रशासन चला रहे थे.

भारत पर अतिरिक्त शुल्क रूस को युद्ध रोकने के लिए मजबूर करने का 'आक्रामक आर्थिक दबाव-वेंस

नयी दिल्ली २९/११ (संवाददाता): अमेरिका के उपराष्ट्रपति जे डी वेंस ने रविवार को कहा कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रूस को यूक्रेन पर बमबारी रोकने के लिए मजबूर करने के वास्ते भारत पर अतिरिक्त शुल्क जैसे ''आक्रामक आर्थिक दबाव'' का इस्तेमाल किया है।

वेंस ने 'एनबीसी न्यूज' पर एक विशेष साक्षात्कार के दौरान यह भी कहा कि इस कदम से रूस के लिए अपनी तेल अर्थव्यवस्था के दम पर समृद्ध होना ''मुश्किल हो जाएगा।''

ट्रंप प्रशासन रूस से रियायती दरों पर कच्चा तेल खरीदने के लिए भारत की कड़ी आलोचना करता रहा है। दिलचस्प बात यह है कि वाशिंगटन रूसी कच्चे तेल के सबसे बड़े आयातक चीन की आलोचना नहीं कर रहा है।

भारत का कहना है कि रूस सहित उसकी ऊर्जा खरीद राष्ट्रीय हित से प्रेरित है। वेंस ने विश्वास जताया कि अमेरिका रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध को समाप्त करने में मध्यस्थता कर सकता है, भले ही इस महीने राष्ट्रपति ट्रंप की रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ बैठक के बाद से कुछ ''रुकावटें'' पैदा हुई हों।

रविवार को प्रसारित हुए साक्षात्कार में प्रस्तोता क्रिस्टन वेल्कर ने पूछा, ''आप उन्हें (पुतिन) जेलेंस्की के साथ बातचीत की मेज पर कैसे ले जाएंगे और बम गिराने से कैसे रोकेंगे?''

वेंस ने जवाब दिया कि ट्रंप ने ''आक्रामक आर्थिक दबाव'' का सहारा लिया है, उदाहरण के लिए ''भारत पर अतिरिक्त शुल्क लगाना, ताकि रूस के लिए अपनी तेल अर्थव्यवस्था से अमीर बनना कठिन हो जाए।

घुसपैठ गंभीर समस्या, भारत की सीमा सुरक्षा के लिए मजबूत नीति महत्वपूर्ण-किरेन रीजीजू

नयी दिल्ली २९/११ (संवाददाता): केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रीजीजू ने शुक्रवार को कहा कि भारत की सीमा सुरक्षा के लिए एक मजबूत नीतिगत ढांचा महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि पिछले दशक में सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास में उल्लेखनीय बदलाव हुए हैं। 'सीमा पार से घुसपैठ-सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवेश पर प्रभाव' विषय पर दिल्ली विश्वविद्यालय में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सज़्मेलन के समापन समारोह को संबोधित करते हुए रीजीजू ने कहा, ''देश की शुरुआत सीमा से होती है। हमारे देश में ज़्यादातर लोग सीमावर्ती इलाकों की समस्याओं को नहीं समझते। सीमा पार से घुसपैठ का सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवेश पर प्रभाव एक गंभीर समस्या

है।''उन्होंने कहा, ''2014 से पहले, जब हम सीमा पर जाते थे, तो उस पार के गांवों में सुविधाएं थीं, लेकिन हमारे यहां नहीं थीं। आज, एक मजबूत नीति के तहत, भारत साहस के साथ अपनी जमीन के हर इंच तक पहुंच रहा है।'' अरुणाचल प्रदेश के निवासी रीजीजू ने कहा कि कई सीमावर्ती गांवों के निवासियों ने बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच की उज़्मीद छोड़ दी थी। उन्होंने कहा, ''2018 में, सड़कें, बिजली और नेटवर्क आखिरकार गुंजी (उज़्राखंड) जैसे दूरदराज के गांवों तक पहुंच गए। 2014 के बाद के नेतृत्व ने एक मज़बूत सीमा नीति शुरू की और अब सकारात्मक बदलाव दिखाई दे रहे हैं। इसके अलावा सीमा जागरण मंच, मोतीलाल नेहरू कॉलेज (सांध्यकालीन) और आंतरिक एवं जन सुरक्षा केंद्र (सीआईपीएस) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस सज़्मेलन में डीयू, जेएनयू और हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों के 174 शोधकर्ताओं और छात्रों ने भाग लिया। सज़्मेलन के साथ आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल हुए केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने सीमा मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने में सीमा जागरण मंच के क्रांतिकारी कार्य की प्रशंसा की। हेमवती विश्वविद्यालय के कुलपति श्रीप्रकाश सिंह ने सीमा संबंधी चिंताओं पर जन जागरूकता के महत्व पर बल दिया, जबकि सीमा जागरण मंच के राष्ट्रीय संयोजक मुरलीधर ने कहा कि घुसपैठ विकास में एक बड़ी बाधा बनी हुई है। मुरलीधर ने कहा, 卐देश की सुरक्षा केवल सेना और पुलिस की जिज़्मेदारी नहीं है; प्रत्येक नागरिक को अपनी भूमिका समझनी चाहिए। सज़्मेलन के संयोजक श्याम नारायण पांडे ने कहा कि सीमा पार से घुसपैठ दक्षिण एशिया को प्रभावित कर रही है, जिससे सुरक्षा, स्थानीय अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक पहचान प्रभावित हो रही है।

कलिंग समाचार
THE KALINGA SAMACHAR
(A Hindi Daily News Paper)
PUBLISHED FROM ODISHA, JHARKHAND & CHATTISHGARH
FOR NEWS AND ADVERTISEMENT CONTACT
AT: QRS. NO. B/204, SECTOR-16
ROURKELA, PH. 0661-2646999
PRAKASH KUMAR DHAL (EDITOR)
E-mail: thekalingasamachar@gmail.com

विविध समाचार

मेंटल हेल्थ को बूस्ट करने में मददगार है अरोमाथेरेपी

आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में फिजिकल हेल्थ खराब होने के साथ ही मेंटल हेल्थ पर भी काफी असर पड़ रहा है। हर दूसरा बंदा काम के बोझ के तले इतना दब गया है कि उसे अपने लिए टाइम ही नहीं है। तनाव के कारण एन्जाइटी और डिप्रेशन जैसी दिक्कत होने लगी है। लोगों की नींद प्रभावित हो रही है, फोकस करने में परेशानी आती है। अगर आप भी इस तरह की परेशानी होती है तो आप मेंटल हेल्थ को बूस्ट करने के लिए अरोमाथेरेपी का सहारा ले सकते हैं।

क्या होती है अरोमाथेरेपी

अरोमाथेरेपी जैसा की इसके नाम से मालूम चल रहा है अरोमा मतलब खुशबू और थेरेपी मतलब इलाज,खुशबू की मदद से इलाज करने को ही हम अरोमाथेरेपी कहते हैं । यह मानसिक तनाव का इलाज करने का सबसे कारगर तरीका है। एसेंशियल ऑयल्स इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है,यह तेल पौधों,जड़ी बूटियों फूलों,पंखुड़ियों जैसी चीजों से निकाले जाते हैं।

मेंटल हेल्थ को कैसे बूस्ट करता है अरोमाथेरेपी

एक्सपर्ट के मुताबिक लैवेंडर कैमोमाइल जैसे एसेंशियल ऑयल्स में शांत करने वाले गुण होते हैं जो तनाव और चिंता को कम करने में मदद करते हैं,इससे बेहतर नींद को बढ़ावा मिलता है और जब आप सुकून भरी नींद सोते हैं तो इससे मस्तिष्क के सेल्स रिपेयर होते हैं । एसेंशियल ऑयल्स की खुशबू लेने से कोर्टिसोल का स्तर कम हो सकता है,जो तनाव के लिए जिम्मेदार हार्मोन होता है,जब आपका कोर्टिसोल हार्मोनकम होता है तो आपको सुकून भरी नींद आती है इससे मेंटल हेल्थ बूस्ट होता है। एसेंशियल ऑयल्स मूड पर पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं,अवसाद की भावनाओं को कम कर देवदार की लकड़ी और चंदन जैसी सुगंध गहरी, अधिक आरामदायक नींद चक्र को बढ़ावा देकर नींद की गुणवत्ता को बढ़ा सकती है। वलैरी सेज जैसे एसेंशियल ऑयल नींद को नियंत्रित करने वाले हार्मोन को संतुलित करने में मदद कर सकते हैं जिससे नींद का पैटर्न सही हो जाता है। अच्छी खुशबू वाला कमरा एक शांत और आरामदायक वातावरण बनाता है जिससे आराम करना और नींद आना आसान हो जाता है।

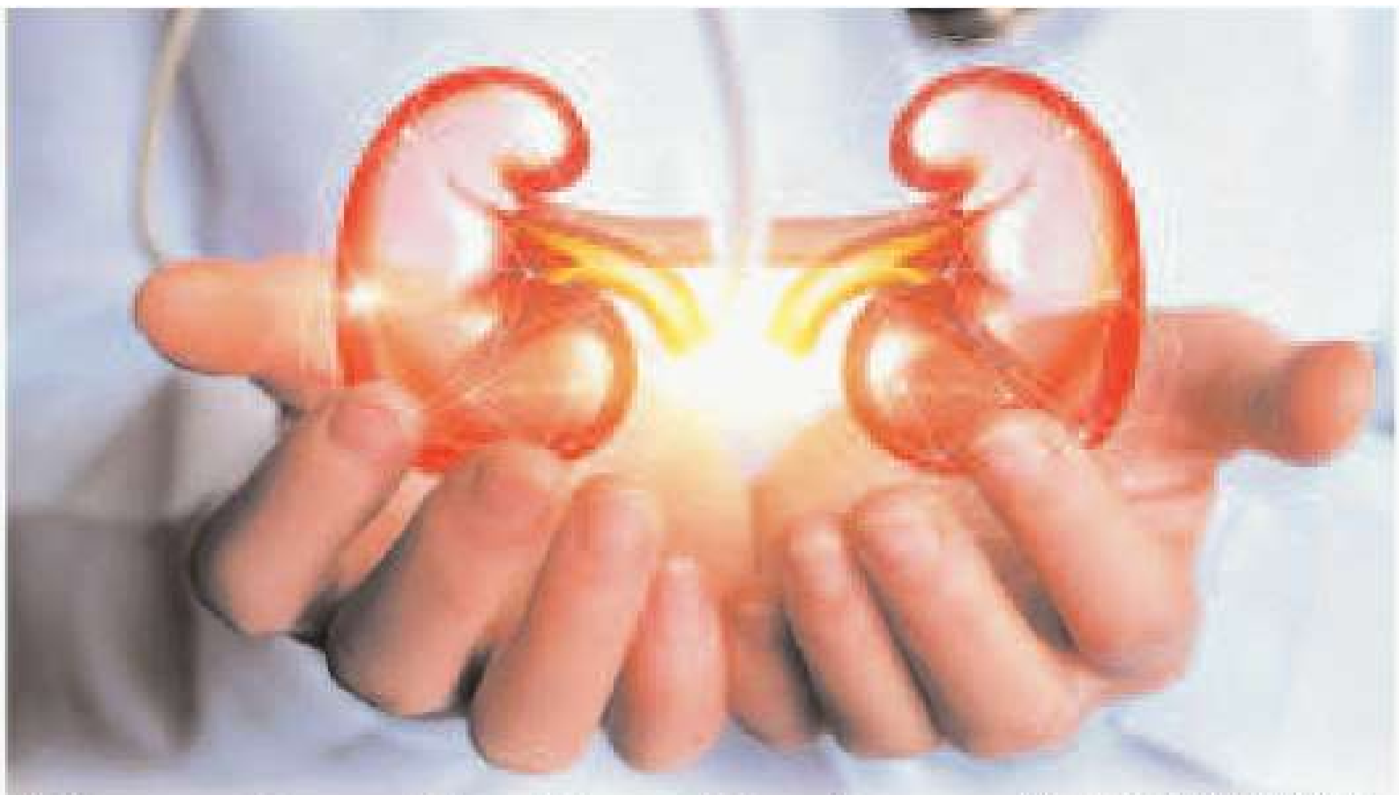

किडनी की बीमारी में आपका शरीर आपको देता है ये संकेत

स्किन और नाखूनों से ये दिखाई देता है कि हमारी किडनी में किस तरह की बीमारी होने जा रही है। आपको ये ध्यान रखना चाहिए कि किडनी के लक्षण काफी गंभीर हो सकते हैं।

हमारा शरीर आने वाले हर खतरे का संकेत पहले से ही देने लगता है। शरीर में अगर कोई बड़ी समस्या होने वाली है तो उससे पहले छोटी-छोटी चीज़ों से हमें कुछ न कुछ संकेत मिलते रहते हैं। शरीर का कोई भी बड़ा ऑर्गन खराब हो रहा हो तो कई बार हमें स्किन और बालों के जरिए भी उसके संकेत मिलने लगते हैं। ऐसा ही किडनी की बीमारी के साथ भी होता है। किडनी की बीमारी होने से पहले स्किन पर कई तरह के बदलाव देखने को मिलते हैं। यहां सिर्फ बालों का झड़ना या फिर हेयर लाइन शुरू होते ही पलेकी स्किन नहीं बल्कि नाखूनों, पैरों, हाथों आदि पर भी असर दिखता है और आपको ये ध्यान रखना चाहिए कि अगर ऐसे कोई लक्षण दिख रहे हैं तो आपको एक्सपर्ट की सलाह लेनी चाहिए। पर आखिर कौन से संकेत हैं जो साफ दिखाई देते हैं।

किडनी की बीमारी के समय शरीर में होती है ये समस्या

स्किन, बाल और नाखून हमारी सेहत को लेकर बहुत ही जरूरी संकेत देते हैं। कोई भी छुपी हुई बीमारी जैसे मालन्यूट्रीशन, माइक्रोन्यूट्रिएंट्स का ओवरडोज, दवाओं का असर या बीमारी आदि के संकेत इन दोनों से मिल जाते हैं। जिन लोगों को किडनी की बीमारी या किडनी फेलियर का रिस्क होता है उन्हें जिंक, कैल्शियम, आयरन, विटामिन डीजैसे मिनरल्स दिए जाते हैं। जिन मरीज़ों को डायलेसिस की जरूरत होती है उन्हें इन मिनरल्स की कमी के लिए रीनल विटामिन्स दिए जाते हैं जिनमें विटामिन बीकॉम्प्लेक्स के हाई लेवल होते हैं। कैल्शियम और आयरन को ब्लड लेवल में मॉनिटर किया जाता है और अगर ये लेवल कम होते हैं तो सप्लिमेंट्स उसी हिसाब से दिए जाते हैं।

किडनी की बीमारी के कारण स्किन पर दिखते हैं ये असर

किडनी की बीमारी के कारण शरीर में टॉक्सिन्स काफी बढ़ जाते हैं और इसके कारण स्किन में नाइट्रोजन भी बढ़ जाता है। स्किन बहुत ड्राई, खुजली वाली हो जाती है। इसी के साथ, स्किन में क्रैक्स, स्केल्स आदि बनने लगते हैं। स्किन काफी पतली हो जाती है और बहुत आसानी से स्ट्रेच मार्क्स भी आ जाते हैं जो कच्चे होते हैं और खुजली वाले भी होते हैं। इनमें आसानी से ब्लीडिंग होने लगती है। स्किन ज्यादा सफेद दिखने लगती है और इसका रंग भी ग्रे, ब्लू, पर्पल या येलो शेड का हो जाता है। सिस्ट्स और स्पॉट्स भी दिख सकते हैं।

हाथ और पैरों में आ जाती है बहुत ज्यादा सूजन

हाथों और पैरों में सूजन, चेहरे में सूजन, एड़ियों में सूजन आना बहुत ही आम लक्षण है जिसे लेकर आपको तुरंत डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। शरीर से टॉक्सिन्स ठीक तरह से बाहर न निकल पाने के कारण ये होता है और आपको इस बात का ध्यान भी रखना चाहिए कि ऐसा लक्षण गंभीर समस्या की तरफ इशारा करता है इसलिए डॉक्टर से सलाह लें।

किडनी की बीमारी के कारण नाखूनों पर दिखते हैं ये असर

नाखूनों पर भी किडनी की बीमारी का असर साफ दिखाई देता है। सफेद बैंड्स या स्पॉट्स नाखूनों पर बनने लगते हैं और ये कमजोर, कच्चे और फ्लेकी हो जाते हैं। अक्सर ऐसे नाखूनों के बीच में लाइन बनने लगती है। हमारे नाखून कई और बीमारियों के संकेत भी देते हैं और ऐसे में हमें ये ध्यान रखना चाहिए कि हम ऐसे कोई भी लक्षण के दिखने पर डॉक्टर से बात करनी चाहिए।

स्किन पर दाने और रैशेज

जैसा कि हम पहले बता चुके हैं कि किडनी की बीमारी के कारण शरीर में टॉक्सिन बहुत ज्यादा इकट्ठा हो जाता है और ये रैशेज, बंप्स, ब्लीडिंग वाली स्ट्रेचमार्क्स आदि का कारण बनता है ऐसे में आप शरीर में कई तरह के मिनरल्स आदि का टेस्ट करवा सकते हैं। ये सारे लक्षण किसी अन्य वजह से भी हो सकते हैं, लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि ये सिर्फ और सिर्फ किडनी के कारण हो। आपको ये ध्यान रखना होगा कि अगर आपको कोई समस्या हो रही है तो एक्सपर्ट की सलाह लेना ही किसी गंभीर रोग से मुक्ति का अच्छा कारण हो सकता है। अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न दिखाएं और डॉक्टर से सलाह लेते रहें।

थायराइड कैसे करता है हार्ट हेल्थ को प्रभावित

आजकल थायराइड की बीमारी काफी आम हो चुकी है। थायराइड रोग वह स्थिति है जिसमें थायराइड ग्लैंड शरीर की जरूरत से कम या अधिक हार्मोन का निर्माण करने लगता है जिसके कारण कई सारी समस्याएं पैदा होती है। थायराइड के कारण जहां मोटापा हेयर फॉल , जोड़ों में दर्द जैसी समस्या होती है वहीं यह दिल की सेहत को भी बुरी तरह से प्रभावित करता है। इसको लेकर हमने एक्सपर्ट से बात की है। आइए जानते हैं थायराइड कैसे दिल की बीमारियों का खतरा बढ़ा देता है।

कैसे करता है हार्ट हेल्थ को प्रभावित

एक्सपर्ट बताती हैं की दोनों ही थायराइड हार्ट हेल्थ को प्रभावित करता है। हाइपोथायरायडिज्म की बात करें तो इसमें थायराइड हार्मोन का लेवल शरीर में कम हो जाता है,इससे थायराइड ग्लैंड का फंक्शन कम होने लगता है,इससे मेटाबॉलिज्म खराब हो जाता है,इससे दिल को नुकसान हो सकता है जैसे इससे हार्ट रेट स्लो हो जाता है,इससे आपको ब्रेडीकार्डिया की स्थिति पैदा हो जाती है। इससे कोलेस्ट्रॉल भी बढ़ सकता है,इसके कारण हृदय का फैलाव हो सकता है। इससे दिल का दौरा पड़ सकता है थायराइड बढ़ने से हार्ट की धमनियां संकरी होने लगती है,इससे ब्लड का सर्कुलेशन ठीक ढंग से नहीं हो पाता है,लंबे समय तक यह स्थिति बनी रहने पर हार्ट अटैक आने का खतरा बना रहता है। हाइपरथायरायडिज्म में आपका थायराइड ग्लैंड ओवर एक्टिव हो जाता है इससे हाइपर मेटाबॉलिज्म होता है जिससे हार्ट रेट बढ़ सकता है,इससे टैकीकार्डिया की स्थिति पैदा हो सकती है। इस स्थिति में भी हार्ट का फैलाव हो जाता है। ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है और इस तरह से हार्ट को नुकसान पहुंचता है।

क्या आपको भी बार-बार बर्फ खाने का मन करता है हो सकता है इस बीमारी का संकेत

क्या आपको भी हर वक्त कच्चा बर्फ चबाने का दिल करता है। अगर हां तो आपको फौरन डॉक्टर से मिलना चाहिए क्योंकि यह एक गंभीर डिसऑर्डर की तरफ इशारा करता है।

गर्मियों के मौसम में हर किसी को कुछ ना कुछ ठंडा खाने का मन करता है। ठंडा पानी तो हर कोई पीता है, लेकिन आइसक्रीम मिल जाए तो सोने पर सुहागा हो जाता है। गर्मी से राहत पाने के लिए कुछ लोग तो घर में रखे आइस क्यूब भी खाते हैं। लेकिन अगर आप बार-बार कच्ची बर्फ चबाते हैं तो इसे इग्नोर ना करें। दरअसल आपकी यह आदत किसी बीमारी की तरफ इशारा करती है। आइए जानते है बार-बार बर्फ खाने का मन क्यों करता है।

क्या आपको भी बार-बार बर्फ खाने का मन करता है आपको भी बार-बार बर्फ खाने की क्रेविंग होती है तो शायद आप पिका डिसऑर्डर से पीड़ित हैं। वैसे तो यह बच्चों या गर्भवती महिलाओं में होता है,लेकिन अगर आप में आयरन की कमी हो तो भी आपको इसकी क्रेविंग हो सकती है। एक्सपर्ट बताते हैं कि एनीमिया से पीड़ित लोगों में रेड ब्लड सेल्स की कमी हो जाती है ऐसे में लोगों को बर्फ खाने की इच्छा बढ़ जाती है। वहीं जो लोग मानसिक तनाव से गुजर रहे होते हैं उन्हें भी बर्फ खाने की क्रेविंग होती है। अगर यह क्रेविंग लंबे समय तक बनी हुई है तो आपको तुरंत डॉक्टर से मिलकर इसका इलाज करवाना चाहिए।

क्या है इसके नुकसान

- दांतों में दर्द, बर्फ आपके दांत की इनेमल की परत को डैमेज कर सकती है।
- एनीमिया की गंभीर समस्या,इसके कारण हार्ट हेल्थ को नुकसान पहुंचता है।
- पेट में इंफेक्शन और कब्ज की समस्या

छींक क्यों नहीं रोकनी चाहिए

छींक आना नॉर्मल है। लेकिन, अगर आपको बहुत अधिक छींक आती है, तो इसे नजरअंदाज करें। इसके अलावा, अगर आप छींक आते वक्त इसे रोकती हैं, तो इससे भी सेहत को नुकसान हो सकता है।

हमारा शरीर सेहतमंद रहने के लिए कई नेचुरल प्रोसेस को फॉलो करता है। पेट साफ होना, गैस बाहर निकलना, डकार आना और छींक आना समेत कई ऐसी चीजे हैं, जिनका हमारी सेहत से गहरा कनेक्शन है। कई बार, नाक के अंदर डस्ट और पाउडर जैसे पार्टिकल्स चले जाते हैं। इन्हें बाहर निकालने के लिए, छींक आती है। वहीं, सर्दी-जुकाम होने पर भी छींक आती है। हालांकि, अगर आपको अक्सर बहुत अधिक छींक आती हैं, तो इसके पीछे कुछ हेल्थ कंडीशन्स हो सकती हैं। आमतौर पर छींक आना काफी नॉर्मल होता है। कई लोग, छींक आने पर इसे रोक लेते हैं। लेकिन, सेहत के लिहाज से ऐसा करना गलत है। एक्सपर्ट के मुताबिक, अगर आप छींक रोकती हैं, तो इससे स्वास्थ्य से जुड़ी कई समस्याएं हो सकती हैं। इस बारे में डॉक्टर नीतिका कोहली जानकारी दे रही हैं। वह आयुर्वेद में एमडी हैं। उन्हें इस फील्ड में लगभग 17 सालों का अनुभव है।

छींक रोकने से सेहत को हो सकता है नुकसान

- दरअसल, हमारी नाक में एक म्यूकस नाम की झिल्ली होती है। इसके टिश्यू या सेल्स पर जब कोई डस्ट पार्टिकल आकर चिपकता है, तो इसे बाहर निकालने के लिए छींक आती है।
- आयुर्वेद में छींक को क्षवथु कहा जाता है। इसे अधारणीय वेग कहा जाता है। इसकी गिनती उन वेगों में होती है, जिन्हें रोका नहीं जा सकता है और रोकना भी नहीं चाहिए।
- छींक के जरिए, बैक्टीरिया और वायरस नाक से बाहर निकल जाते हैं। इसलिए, यह फायदेमंद होती है।
- छींक रोकना सेहत के लिहाज से सही नहीं है। इससे गर्दन अकड़ सकती है और साइनस की दिक्कत भी हो सकती है।
- अगर आप छींक आने पर इसे रोकने की कोशिश करते हैं, तो इससे फेस की नर्व्स और मसल्स कमजोर हो सकती हैं।
- यह शरीर की सफाई का एक नेचुरल प्रोसेस है। इसलिए, इसे होल्ड नहीं करना चाहिए।
- एक्सपर्ट के मुताबिक, कई बार सोशल एटिकेट्स या अन्य कई वजहों से लोग छींक को रोक लेते हैं। लेकिन, छींक रोकने से फेफड़ों पर दबाव पड़ता है। इससे श्वसन तंत्र पर बुरा असर हो सकता है।
- छींक के जरिए, बाहर निकलने वाली हवा का प्रेशर काफी तेज होता है। इसे रोकने से, आंख, नाक और कान के ब्लड वेसल्स पर असर पड़ सकता है।
- छींक आने पर उसे रोकने की कोशिश न करें। एक्सपर्ट की सलाह पर जरूर ध्यान दें। अगर आपको स्वास्थ्य से जुड़ी कोई समस्या है, तो हमें आर्टिकल के ऊपर दिए गए कमेंट बॉक्स में बताए। हम अपने आर्टिकल्स के जरिए आपकी समस्या को हल करने की कोशिश करेंगे।

कलिंग समाचार

संपादकीय

रविवार 30 नवंबर 2025

रश्मि शुक्ला का तबादला विपक्ष की जीत

केन्द्रीय चुनाव आयोग के निर्देश पर महाराष्ट्र की पुलिस महानिदेशक रश्मि शुक्ला का हटाया जाना महाविकास अघाड़ी ;एमवीएद्ध की एक बड़ी जीत मानी जा सकती है। कांग्रेस सहित अनेक विपक्षी दल कई बार उन पर पक्षपात का आरोप लगा चुके हैं। उन पर मु यतरू विपक्षी नेताओं की फोन टेपिंग कराने के आरोप हैं। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष नाना पटोले ने उनके खिलाफ मोर्चा खोला हुआ था जिसे अन्य विरोधी दलों का भी समर्थन था। उनका आरोप था कि पुलिस की सर्वोच्च अधिकारी का रुख सत्ताधारी दल के प्रति नरम है जिसके कारण निष्पक्ष चुनाव की उ मीद नहीं की जा सकती। उनकी मांग पर केन्द्रीय निर्वाचन आयोग ने शुक्ला को तत्काल स्थानांतरित करने का महाराष्ट्र सरकार को आदेश देते हुए कहा कि मंगलवार को दोपहर 1 बजे तक वह पुलिस के 3 वरिष्ठतम अधिकारियों के नाम भेजे ताकि नये डीजीपी की नियुक्ति हो। 1988 बैच की आईपीएस रश्मि पर सरकार समर्थक होने का आरोप लगता रहा है। इस साल की जनवरी में सेवानिवृत्त हो चुकी रश्मि शुक्ला का कार्यकाल एकनाथ शिंदे सरकार द्वारा दो वर्ष के लिये बढ़ाया गया था। माना जाता है कि सेवा बढ़ाये जाने के एवज में वे शिंदे के नेतृत्व में चल रही नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस के पक्ष में कार्य कर रही थींए जिनमें शिवसेना ;शिंदे गुटद्धए भारतीय जनता पार्टी और नेशनल कांग्रेस पार्टी ;अजित पवार गुटद्ध शामिल हैं। झारखंड और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव एक साथ हो रहे हैं जिसके पहले ज मू.कश्मीर तथा हरियाणा के चुनाव हो चुके हैं। इन राज्यों की समीक्षा बैठक करते हुए केन्द्रीय चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने सभी प्रदेशों के निर्वाचन अधिकारियों से निष्पक्ष प्रक्रिया अपनाने का आग्रह किया था ताकि पारदर्शी तरीके से चुनाव स पन्न हो सकें। वैसे चुनाव आयुक्त के इस निर्देश को महज औपचारिकता माना गया था क्योंकि आयोग का ट्रैक रिकॉर्ड बड़े पैमाने पर भाजपा को मदद करने का रहा है। एक अर्से से चुनाव आयोग को भाजपा की जेब में बैठा हुआ साफ देखा गया है जिसके अनेक उदाहरण हैं। अब यह कहने में कोई गुरेज़ नहीं होना चाहिये कि भाजपाए खासकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं कुछ प्रमुख नेताओं की सुविधानुसार आयोग सभी तरह के चुनावों का आयोजन करता है। किस राज्य में कितने चरणों में चुनाव होगा. यह भी भाजपा तथा मोदी की इच्छा और पार्टी की सहूलियत के मुताबिक निर्धारित किया जाता है। बात यहीं तक नहीं रुकती। विभिन्न नेताओं के भाषणों तथा प्रचार को लेकर किस पर कार्रवाई करनी है और किसकी ओर से आंखें मूंदनी हैंए यह भी आयोग चेहरा देखकर ही तय करता है। भाजपा के नेताओं को नफ़रती भाषणों की पूरी छूट होती है। वे अक्सर भाषायी मर्यादा का उल्लंघन करते हैं और असंसदीय व्यवहार अपनाते हैं लेकिन आयोग उसकी उपेक्षा करता है। इसके विपरीत भाजपा विरोधी दलों के नेताओं के भाषणों एवं उद्बोधनों पर कड़ी नज़र रखी जाती है। पिछले कई चुनावों के दौरान देखा गया कि चुनाव आयोग जिस तरह के कथनों पर विरोधी दल के नेताओं को मुस्तैदी से नोटिस जारी करता है या उनके प्रचार पर कुछ घंटों से लेकर कुछ दिनों का प्रतिबन्ध लगाता हैए वैसे ही कथन भाजपा के किसी भी नेता की ओर से आते हैं तो वह कानों में रूई डालकर बैठ जाता है। मोदीए केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाहए असम के मु यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमाए पूर्व केन्द्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर समेत ऐसे कई भाजपायी नेता हैं जिन्होंने हाल के वर्षों की चुनावी रैलियों में जमकर ज़हर उगला था परन्तु किसी पर कार्रवाई नहीं हुई। चुनाव आयोग की पक्षपातपूर्ण कार्रवाई का नमूना इसी मामलेए यानी डीजीपी वाले में भी दिखा। झारखंड के डीजीपी अनुराग गुप्ता के खिलाफप्रदेश भाजपा इकाई ने शिकायत की थी। उन्हें वहां के मु यमंत्री हेमंत सोरेन का नज़दीकी बतलाया जाता था। इसके साथ ही उनके कथित विवादित इतिहास का भी हवाला दिया गया था। चुनाव का ऐलान होते ही 21 अक्टूबर को गुप्ता को हटाने का निर्देश आयोग ने दियाए लेकिन रश्मि शुक्ला को रहने दिया गया जिनके खिलाफ़फोन टेपिंग की शिकायतें हुई हैंए फिर उन्हें एक्सटेंशन दिया गया था जो उनकी सत्तारूढ़ गठबन्धन से नज़दीकियों को बतलाता है।

आदिवासी बच्चों का अनोखा स्कूल

बाबा मायाराम

यहां आधुनिक रिकार्डिंग स्टूडियों भी हैए जहां आदिवासी संस्कृति पर वीडियो बनाए जाते हैंए इसका भील वॉयस नामक एक यू ट्यूब चैनल भी हैए जिसमें कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। स्कूल की शुरूआत में बिना पाठ्यपुस्तकों के ही पढ़ाई होती थी। भिलाली और हिन्दी में बच्चों को पढ़ना.लिखना सिखाया जाता था। लेकिन जल्द ही पाठ्यक्रम विकसित किया गया। अब तो मध्यप्रदेश के स्कूली पाठ्यक्रम के अलावा कौशल आधारित शिक्षा व प्रशिक्षण दिया जाता है। मध्यप्रदेश के अलीराजपुर जिले के ककराना गांव में ऐसा आवासीय स्कूल हैए जहां न केवल पलायन करने वाले आदिवासी मजदूरों के बच्चे पढ़ते हैं बल्कि हुनर भी सीखते हैं। यहां उनकी पढ़ाई भिलालीए हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में होती है। वे यहां खेती.किसानी से लेकर कढ़ाईए बुनाईए बागवानी और मोबाइल पर वीडियो बनाना सीखते हैं। आज के कॉलम में इस अनोखे स्कूल की कहानी सुनाना चाहूंगाए जिससे यह पता चले कि स्थानीय लोग भी स्कूल बना सकते हैंए चला सकते हैं और उनके बच्चों को शिक्षित कर सकते हैं।

मैं इस स्कूल को देखने और समझने दो बार जा चुका हूं। स्कूल के अतिथि गृह में ठहरा हूं। इस दौरान शिक्षकोंए छात्रों और ग्रामीणों से मिला हूं। कई गांवों में गया हूं। मुझे यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि यहां का स्कूल बहुत ही अनुशासितए व्यवस्थित और नियमित है। स्कूल के साथ.साथ प्रकृति से जुड़कर पढ़ाने पर जोर दिया जाता है। यहां के अधिकांश शिक्षक स्वयं आदिवासी हैंए और इनमें से एक.दो तो इसी स्कूल से पढ़े हैं। पश्चिमी मध्यप्रदेश का अलीराजपुर जिला सबसे कम साक्षरता वाले जिलों में से एक है। यहां के बाशिन्दे भील आदिवासी हैं। यहां की प्रमुख आजीविका खेती है। लेकिन चूंकि असिंचित और पहाड़ी खेती हैए इसलिए अधिकांश लोग पलायन करते हैं। यहां के अधिकांश लोग राजस्थान और गुजरात में मजदूरी के लिए जाते हैंए इसलिए उनके बच्चों की पढ़ाई नहीं हो पाती थी। लेकिन इस आवासीय स्कूल से बच्चों की पढ़ाई हो रही है। इस इलाके में आदिवासियों के हक और स मान के लिए खेडुत मजदूर चेतना संगठन सक्रिय रहा है। शुरूआत में इस संगठन ने अनौपचारिक रूप से आदिवासी बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। लेकिन बाद में इसके कार्यकर्ता कैमत गवले व गांववासियों ने मिलकर ककराना गांव में आवासीय स्कूल की शुरूआत की। यह वर्ष 2000 की बात है। स्कूल का नाम रानी काजल जीवनशाला है। यह स्कूलए मध्यप्रदेश शिक्षा विभाग में पंजीकृत है और यहां माध्यमिक स्तर की शिक्षा दी जाती है।

स्कूल के प्राचार्य निंगा सोलंकी बताते हैं कि वर्ष 2008 में हमने कल्पांतर शिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र समिति गठित कीए जो स्कूल के संचालन के लिए वित्तीय मदद जुटाती है। हाल ही में महिला जगत लिहाज समिति नामक संस्था ने भी संचालन में सहयोग करना शुरू किया हैएजिसकी मदद से नए भवन बने हैं और छात्रावास भी संचालित हो रहा है। स्कूल का सर्व सुविधायुक्त परिसर हैए भवन हैं और 2 एकड़ जमीन हैए जिसमें हरे.भरे पेड़.पौधों के साथ जैविक खेती भी होती है। यह परिसर पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहां मिट्टी.पानी का संरक्षण होए यह सुनिश्चित किया जा रहा है। मिट्टी का क्षरण न हो और पानी की एक बूंद भी परिसर से बाहर न जाएए इसलिए परिसर में पेड़.पौधों का रोपण किया गया है। यहां सागौनए महुआए शीशमए कटहलए बादामए सीताफलए जामए नीमए नींबूए अंजन जैसे करीब 2000 पौधे रोपे गए हैं। विद्यार्थी प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण व संवर्धन का काम करते हैं। परिसर में सैकड़ों तरह के पक्षियों का बसेरा भी है।

वे आगे बताते हैं कि आदिवासी बच्चों के लिए आवासीय स्कूल की जरूरत हैए क्योंकि उनके परिवार में पढ़ाई.लिखाई का कोई माहौल नहीं है। वे आजाद भारत में पहली पीढ़ी हैंए जो शिक्षित हो रहे हैं। हमने यह महसूस किया कि बच्चों को एक दिन के स्कूल की तुलना में ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। इसलिए आवासीय स्कूल का निर्णय लिया गया। दैनिक स्कूलों में कामकाज की समीक्षा से पता चला कि अशिक्षित माता.पिता के बच्चों के प्रभावी शिक्षण के लिए उन्हें नियमित स्कूली घंटों के अलावा भी पढ़ाने की जरूरत है। इन्हें जो शिक्षक पढ़ाते हैंए वे भी उनके बीच के हैं और परिसर में ही रहते हैं।

इस शाला का नाम आदिवासियों की देवी रानी काजल के नाम पर रखा गया है। जिसके बारे में मान्यता है कि यह देवी महामारी व संकट के समय उनकी रक्षा करती है। स्कूल की फीस का ढांचा ऐसा है कि अभिभावक इसे वहन कर सकें।

प्राचार्य सोलंकी बतलाते हैं कि इस स्कूल का उद्देश्य आदिवासी पहचान और संस्कृति का संरक्षण करना भी है। इसमें दूसरी कक्षा तक भिलाली भाषा में बच्चों को पढ़ाया जाता है। और इसके बाद हिन्दी और अंग्रेजी भी पढ़ाई जाती है। कुछ भीली किताबों का अंग्रेजी और हिन्दी में भी अनुवाद किया गया है। वे आगे बताते हैं कि यहां पढ़ाई के साथ हाथ के हुनर व कारीगरी सिखाई जाती है। किसानीए लोहारीए बढ़ईगिरीए सिलाई और बागवानी इसमें प्रमुख हैं। पिछले वर्ष मध्यप्रदेश शिक्षा मंडल द्वारा आयोजित पांचवी और आठवीं कक्षा की परीक्षाओं में इस विद्यालय के विद्यार्थी जिले में अव्वल आए थे। कुछ अधिकारी और सरकारी नौकरियों में गए हैं। स्कूल के एक शिक्षक हैंए जो पहले इसी स्कूल के विद्यार्थी रह चुके हैं। पहली बार नर्मदा किनारे गांवों की लड़कियां पढ़ रही हैंए और उनमें से एक शिक्षिका भी बन गई हैं।

स्कूल के प्राचार्य निंगा सोलंकी बताते हैं कि वर्ष 2008 में हमने कल्पांतर शिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र समिति गठित कीए जो स्कूल के संचालन के लिए वित्तीय मदद जुटाती है। हाल ही में महिला जगत लिहाज समिति नामक संस्था ने भी संचालन में सहयोग करना शुरू किया हैएजिसकी मदद से नए भवन बने हैं और छात्रावास भी संचालित हो रहा है। स्कूल का सर्व सुविधायुक्त परिसर हैए भवन हैं और 2 एकड़ जमीन हैए जिसमें हरे.भरे पेड़.पौधों के साथ जैविक खेती भी होती है। यह परिसर पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहां मिट्टी.पानी का संरक्षण होए यह सुनिश्चित किया जा रहा है। मिट्टी का क्षरण न हो और पानी की एक बूंद भी परिसर से बाहर न जाएए इसलिए परिसर में पेड़.पौधों का रोपण किया गया है।

इसके अलावाए यहां आधुनिक रिकार्डिंग स्टूडियो भी हैए जहां आदिवासी संस्कृति पर वीडियो बनाए जाते हैंए इसका भील वॉयस नामक एक यू ट्यूब चैनल भी हैए जिसमें कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं।

स्कूल की शुरूआत में बिना पाठ्यपुस्तकों के ही पढ़ाई होती थी। भिलाली और हिन्दी में बच्चों को पढ़ना.लिखना सिखाया जाता था। लेकिन जल्द ही पाठ्यक्रम विकसित किया गया। अब तो मध्यप्रदेश के स्कूली पाठ्यक्रम के अलावा कौशल आधारित शिक्षा व प्रशिक्षण दिया जाता है।

हर साल गर्मी की छुट्टियों के दौरान प्राचार्य निंगा सोलंकी और शिक्षिका रायटी बाई ने नई शिक्षण पद्धति अपनाई है। वे पाठ्यक्रम से संबंधित शैक्षणिक वीडियो व आडियो बनाते हैंए जिन्हें बाद में बच्चों के माता.पिता के मोबाइल पर साझा किया जाता है। इससे बच्चे परिसर के बाहर घर में भी उनकी पढ़ाई जारी रखते हैं। महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए फोन कॉल और संदेशों का आदान.प्रदान भी किया जाता है। प्राचार्य सोलंकी बतलाते हैं कि आदिवासियों की संस्कृतिए बोलियां और जीवनशैली आधुनिक प्रभावों के कारण तेजी से बदल रही है। उनकी पारंपरिक जीवनशैली का अनुताापन लुप्त हो रहा हैए इसलिए हमने भीली में यह कार्यक्रम शुरू किया है जिससे उसका संरक्षण किया जा सके।

इसके लिए अमेरिका में प्रवासीय भारतीय प्रोफेसर उत्तरन दत्ता ने सहयोग दिया है और उनके मार्गदर्शन में 15.20 बच्चों को मोबाइल वीडियोग्राफी और वीडियो संपादन का प्रशिक्षण दिया गया है। इसके माध्यम से लोकगीतए कहानियां और पारंपरिक उपचार विधियों और जंगलों के खान.पान व महत्व पर आधारित कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं।

कुल मिलाकरए यह आदिवासी मजदूर बच्चों का आवासीय स्कूल हैए जिसमें न केवल पढ़ाई करते हैंए बल्कि गतिविधि आधारित शिक्षा भी हासिल करते हैं। प्रकृति अवलोकनए श्रम आधारित उत्पादन पद्धति से भी सीखते हैं। उनकी भीली.भिलाली भाषा में मौलिक अभिव्यक्ति भी करते हैं। इसके लिए उनका यू ट्यूब चैनल भी है। इस स्कूल के मूल्यों में एक आदिवासी पहचानएसंस्कृति व अच्छी परंपराओं का संरक्षण करना भी है। इस स्कूल की खास बात यह भी है कि स्कूली शिक्षक उनके बीच रहते हैं। जिज्ञासाए सवाल व समस्याओं के हल के लिए सहज ही उपलब्ध हैं। वे एक परिवार की तरह रहते हैं। बच्चों को तोतारटंत किताबी ज्ञान नहींए बल्कि श्रम के मूल्य साथ समझ विकसित करने की कोशिश की जाती है। इस स्कूल ने श्रम के मूल्य का बोध भी कराया हैए जिसका पूरी शिक्षा व्यवस्था में लोप हो गया है। यह पूरी पहल सराहनीय होने के साथ अनुकरणीय भी है।

डॉक्टरों की बढ़ती आत्महत्याएं-चिकित्सकों को चिकित्सा की जरूरत

अमरपाल सिंह वर्मा

सरकारए मेडिकल संस्थानोंए इंडियन मेडिकल एसोसिएशनश् और समाज को मिलकर ऐसे उपाय करने होंगेए जिससे डॉक्टरों और मेडिकल छात्रों के लिए काम और जीवन के बीच संतुलन कायम करना आसान हो। यह भी आवश्यक है कि समाज की ओर से डॉक्टरों पर अनावश्यक अपेक्षाओं का बोझ न डाला जाए। डॉक्टर भी इंसान हैंए उनकी भावनाओं और सीमाओं का स मान किया जाना चाहिए।

लोगों की सेवा एवं उनका इलाज करने के लिए जुटे रहने वाले डॉक्टर गंभीर संकट के दौर से गुजर रहे हैं। हाल ही में ब्रिटिश मेडिकल जर्नलश् में प्रकाशित एक शोध रिपोर्ट चिंतित कर देने वाली है। इस रिपोर्ट में डॉक्टरों और मेडिकल छात्रों की मानसिक स्वास्थ्य स्थिति पर गहरी चिंता जताई गई है। इसमें यह तथ्य सामने आया है कि मेडिकल की पढ़ाई कर रहे छात्रों और डॉक्टरों में आत्महत्या का खतरा आम लोगों की तुलना में कहीं अधिक है। महिला डॉक्टरों पर इसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव पड़ रहा है। तनाव की वजह से आत्महत्या का सबसे अधिक खतरा महिला डॉक्टरों को है। इस शोध के अनुसार महिला डॉक्टरों में आत्महत्या का खतरा आम लोगों की तुलना में 24 प्रतिशत अधिक है। भारत में किए गए अध्ययनों से भी यह स्पष्ट हुआ है कि 40 प्रतिशत महिला डॉक्टर अत्यधिक तनाव में काम करती हैं। इस तनाव का सीधा संबंध मेंटल डिसऑर्डर और आत्महत्या के विचारों से है। इंडियन जर्नल ऑफसाइकियाट्रीश् में प्रकाशित एक शोध से भारत के डॉक्टरों के लिहाज से भी चिंताजनक तस्वीर उभरती है। इस जर्नल के आंकड़ों के अनुसारए पिछले एक दशक में भारत में 358 डॉक्टरों और मेडिकल छात्रों ने आत्महत्या की हैए जिनमें से 70 प्रतिशत की उम्र मात्र 30 से 40 वर्ष के बीच थी। यह आंकड़ा केवल एक नंबर नहीं हैए बल्कि यह समाज के लिए एक गंभीर चेतावनी है। जब देश के युवा और प्रतिभाशाली डॉक्टर तनाव और मानसिक दबाव के कारण अपनी जान लेने पर मजबूर हो रहे हैं तो यकीनन यह हमारे हेल्थ केयर सिस्टम और समाज के लिए एक बहुत बड़ी क्षति है।

भारत के अध्ययनों से पता चलता है कि 40 प्रतिशत महिला डॉक्टरों को अत्यधिक तनाव की हालातों में काम करना पड़ रहा है। बढ़ता मानसिक असंतुलन और आत्महत्या के विचार इसके कारण हैं। डॉक्टर एमबीबीएस के बाद विशेषज्ञ बनने के लिए पीजी की तैयारी में जुट जाते हैं। एक तरफकाम का दबाव होता हैए दूसरी ओर पढ़ाई की चिंता सताती है। इससे उपजे तनाव में संतुलन रखना बहुत कठिन होता है। शायद इसी का परिणाम है कि पिछले पांच सालों में 1270 मेडिकल छात्रों ने पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी। इनमें 153 एमबीबीएस तथा 1117 पीजी में एडमिशन लेने वाले छात्र थेए जो एमबीबीएस के बाद विशेषज्ञ डॉक्टर बनने की चाह लिए हुए थे।हमारे देश में आत्महत्या करने वाली महिला डॉक्टरों में सर्वाधिक 22ण्4 प्रतिशत श्एनेस्थीसिया विभागश्ए ;निश्चेतनाद्ध की एवं 16 प्रतिशत श्स्त्री एवं प्रसूति रोग विभागश् की थीं। इन विभागों के डॉक्टरों के पास ही सर्वाधिक श्हाई.रिस्कश् वाले मरीज आते हैंए इसलिए उन पर काम का दबाव एवं तनाव ज्यादा होता है।

डॉक्टरों की भारी कमी वाले हमारे देश में बन रहे ये हालात बहुत बुरे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषज्ञ चिकित्सकों की कमी की वजह से लोगों को इलाज के लिए बड़े शहरों की ओर भागना पड़ रहा है। केंद्र सरकार का दावा है कि देश में डॉक्टर.जनसं या अनुपात श्विश्व स्वास्थ्य संगठनश् ;डब्ल्यूएचओद्ध की ओर से निर्धारित मानदंडों से बेहतर हैए मगर स्वास्थ्य मंत्रालय के पिछले साल के आंकड़ों से पता चलता है कि ग्रामीण भारत में श्सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रोंश् ;सीएचसीद्ध में विशेषज्ञ डॉक्टरों की भारी कमी है। मंत्रालय द्वारा जारी भारत की श्स्वास्थ्य गतिशीलता ;बुनियादी ढांचा और मानव संसाधनद्ध 2022.23 रिपोर्टश् के निष्कर्षों के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में श्सीएचसीश् में जरूरी 21 हजार 964 सर्जनए प्रसूतिध्स्त्री रोग विशेषज्ञए फिजिशियन और बाल रोग विशेषज्ञों के मुकाबले भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 17 हजार 551 विशेषज्ञों की कमी है।सीनियर डॉक्टरों की मानें तो मेडिकल छात्रों और डॉक्टरों पर अत्यधिक दबाव उनके लंबे और कठोर प्रशिक्षणए भारी कार्यभारए सामाजिक अपेक्षाओं और मानसिक स्वास्थ्य सहायता की कमी से उत्पन्न होता है। महिला डॉक्टरों को अपनी प्रोफेशनल लाइफके साथ.साथ पारिवारिक जि मेदारियों का भी संतुलन बनाना पड़ता हैए जिससे उनकी स्थिति और जटिल हो जाती है। अस्पतालों में तोड़फोड़ए डॉक्टरों से मारपीट और अभद्र व्यवहार जैसी घटनाएं भी इस स्थिति के लिए कम जि मेदार नहीं हैं।

वर्ष 2022 में राजस्थान के लालसोट में इलाज के दौरान एक प्रसूता की मौत होने पर धरने.प्रदर्शन और पुलिस द्वारा अपने खिलाफमुकदमा दर्ज करने से परेशान होकर सुसाइड कर लेने वाली युवा चिकित्सक डॉण् अर्चना शर्मा की मौत आज भी झकझोरती है। डॉण् अर्चना ने सुसाइड नोट में लिखा था कि श्मैंने कोई गलती नहीं की हैए किसी को नहीं मारा। प्रसवोत्तर रक्तस्राव ;पीपीएचद्ध एक कॉम्प्लिकेशन हैए इसके लिए डॉक्टरों को प्रताड़ित करना बंद करोश्। हाल में भरतपुर के रेडियोलॉजिस्ट डॉण् राजकुमार चौधरी ने आगरा में जाकर सुसाइड कर ली है। पूरे देश में इस तरह के मामले आते रहते हैं।

यह समस्या बहुत बड़ी है जिसका त्वरित समाधान होना चाहिएए लेकिन यह तभी हो सकता हैए जब समस्या की जड़ों तक पहुंचकर असलियत की थाह ली जाए। यह जरूरी है कि महिला डॉक्टरों के दृष्टिगत श्हेल्थ केयर सिस्टमश् में लिंग संवेदनशील रणनीतियां प्रभावी ढंग से लागू की जाएं। कामकाजी माहौल को महिला डॉक्टरों के लिए अधिक अनुकूल बनाना होगा। इसके साथ हीए डॉक्टरों और छात्रों को मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करने के लिए विशेष कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए।

सरकारए मेडिकल संस्थानोंए इंडियन मेडिकल एसोसिएशनश् और समाज को मिलकर ऐसे उपाय करने होंगेए जिससे डॉक्टरों और मेडिकल छात्रों के लिए काम और जीवन के बीच संतुलन कायम करना आसान हो। यह भी आवश्यक है कि समाज की ओर से डॉक्टरों पर अनावश्यक अपेक्षाओं का बोझ न डाला जाए। डॉक्टर भी इंसान हैंए उनकी भावनाओं और सीमाओं का स मान किया जाना चाहिए। जिस प्रकार डॉक्टर समाज के लिए जुटे रहते हैंए उसी प्रकार समाज के प्रत्येक वर्ग को भी डॉक्टरों के मानसिक स्वास्थ्य एवं सुकून को बनाए रखने के लिए योगदान देना चाहिए।

विविध समाचार

खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 : समर्थन मूल्य पर धान खरीदी का शुभारंभ

धमतरी। खरीफविपणन वर्ष 2025-26 के लिए समर्थन मूल्य पर धान खरीदी का शुभारंभ जिले में कल 15 नवज़्बर 2025 से किया जा रहा है। धमतरी जिले के सभी धान उपार्जन केन्द्रों में आवश्यक तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं। कलेज़्टर अबिनाश मिश्रा ने कहा है कि किसानों को धान विक्रय के दौरान किसी प्रकार की समस्या न हो, इसके लिए व्यापक व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। उन्होंने सभी अधिकारियों को उपार्जन केंद्रों में किसानों की सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए हैं। कलेज़्टर के मार्गदर्शन में सहकारिता, मार्कफेड तथा खाद्य विभाग द्वारा बारदाना, फड़, चबूतरा, पेयजल, छायादार बैठने की व्यवस्था सहित सभी प्रबंध कर लिए गए हैं। कलेज़्टर मिश्रा ने 13 नवंबर को स्वयं विभिन्न धान खरीदी केन्द्रों का निरीक्षण कर तैयारियों का जायजा लिया। जिले में इस वर्ष भी पिछले वर्ष की भांति किसानों से धान खरीदी के लिए 100 उपार्जन केन्द्र संचालित किए जाएंगे। खरीदी के साथ ही उठाव व्यवस्था भी सुनिश्चित की गई है, ताकि खरीदी केंद्रों में भीड़ या अव्यवस्था की स्थिति न बने। खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 में 15 नवज़्बर 2025 से 31 जनवरी 2026 तक पंजीकृत किसानों से धान खरीदी की जाएगी। जिले में अब तक 1,22,800 किसानों का पंजीयन किया गया है, जिनका कुल रकबा 1,11,207.67 हेज़्टेयर है। इसके अतिरिक्त लगभग 6,700 किसानों का केरी फॉरवर्ड किया जाना शेष है। धान उपार्जन की गुणवज़ा और व्यवस्था की निगरानी के लिए प्रत्येक उपार्जन केंद्र पर नोडल अधिकारी नियुक्त किए गए हैं।

साथ ही समिति स्तर पर भी निगरानी समितियों का गठन किया गया है, जो खरीदी प्रक्रिया के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करेंगे। परंपरा अनुसार 15 नवज़्बर को सभी उपार्जन केंद्रों में कांटा-बांट की पूजा-अर्चना कर खरीदी प्रक्रिया प्रारंभ की जाएगी। अवैध भंडारण, परिवहन एवं पुनर्चक्रण को रोकने हेतु तहसील स्तर पर उड़नदस्ता दल गठित किए गए हैं, जिनमें राजस्व, मंडी, खाद्य, सहकारिता और कृषि विभाग के अधिकारियों-कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। ओडिशा सीमा से लगे बोराई (घुटकेल), बांसपानी, बनरौद और सांकरा में चेक पोस्ट स्थापित किए गए हैं, जहां विभिन्न विभागों के अमले की तैनाती रहेगी। धान उपार्जन में लगे अधिकारियों-कर्मचारियों को नीतिगत प्रावधानों एवं प्रक्रिया संबंधी विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया है। खरीदी केन्द्रों में धान की सुरक्षा के लिए ड्रेनेज, तारपोलिन तथा सीसीटीवी कैमरों की व्यवस्था भी की जा रही है। मौसम परिवर्तन की स्थिति के मद्देनज़र अग्रिम तैयारी के निर्देश दिए गए हैं। सहकारिता विभाग के अनुसार सभी समितियों में किसानों की सुविधा के लिए माइक्रो एटीएम की व्यवस्था की गई है, जिससे किसान तत्कालिक आवश्यकता हेतु राशि निकाल सकेंगे। साथ ही समितियों को सही संज़्या में ही टोकन जारी कर खरीदी में अनुशासन बनाए रखने के निर्देश दिए गए हैं। जिला प्रशासन ने अपील की है कि किसान निर्धारित तिथि एवं टोकन के अनुसार धान लेकर उपार्जन केंद्र पहुंचे और समर्थन मूल्य पर धान विक्रय की सुव्यवस्थित प्रक्रिया का लाभ उठाएं।

अधिवक्ता जितने सशक्त, न्याय उतना प्रखर : शत्रुहन सिंह साहू

धमतरी। छज़ीसगढ़ राज्य विधिज्ञ परिषद चुनाव में धमतरी के वरिष्ठ एवं लोकप्रिय अधिवक्ता शत्रुहन सिंह साहू ने उल्लेखनीय जीत दर्ज करते हुए सदस्य पद पर विजय हासिल की है। इस ऐतिहासिक जीत के बाद 14 नवज़्बर शुक्रवार को वे धमतरी नगर में आभार यात्रा के रूप में रैली निकालते हुए जनता एवं अधिवक्ता समाज का धन्यवाद करने पहुँचे। शहरभर में जगह-जगह उनका भव्य स्वागत किया गया। जिला व्यवहार न्यायालय परिसर में अधिवक्ताओं ने, मकई चौक में कांग्रेसियों ने पूर्व विधायक लेखराम साहू के नेतृत्व में तो सिहावा चौक में महापौर के नेतृत्व में स्वागत किया तो वहीं शिवाजी नगर के पास शहर वासियों ने, कर्मा चौक में साहू समाज ने, बिलाई माता मंदिर में किसान संघ ने तथा घड़ी चौक में ओबीसी संयोजन संघ के सदस्यों ने गोल बाजार के मुस्लिम समाज ने पुष्पमालाओं व उत्साहपूर्वक अभिनंदन किया। समर्थकों से घिरे अधिवक्ता शत्रुहन साहू का स्वागत पूरे दिन चलता रहा। इस दौरान अपने संबोधन में श्री साहू ने कहा कि यह जीत मेरी नहीं, पूरे अधिवक्ता समाज की जीत है। अधिवक्ताओं ने जो विश्वास मुझ पर जताया है, वह मेरे लिए प्रेरणा और सेवा का अवसर है। उन्होंने कहा कि विधि व्यवसाय केवल एक पेशा नहीं, बल्कि न्याय और समाज के बीच का सशक्त सेतु है। अधिवक्ता समाज शज़्दों से नहीं, कर्म और व्यवहार से प्रभावित होता है। उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हुए उनकी समस्याओं को अपनी जिज़्मेदारी के रूप में लिया—यही आत्मीयता इस विजय की सबसे बड़ी पूंजी है। युवा अधिवक्ताओं को विधि जगत का भविष्य बताते हुए श्री साहू ने कहा मैं 'युवा अधिवक्ता प्रोत्साहन मंच' बनाने का प्रस्ताव रखूंगा, जहाँ वरिष्ठ अधिवक्ता युवा साथियों को मेंटॉर करेंगे। डिजिटल ट्रेनिंग, लॉ वर्कशॉप और प्रारंभिक विज़ीय सहायता जैसी योजनाएँ प्राथमिकता रहेगी। उन्होंने परिषद में अपनी प्राथमिकताओं को भी स्पष्ट किया अधिवक्ता कल्याण कोष की प्रक्रिया को समयबद्ध और पारदर्शी बनाना। युवा अधिवक्ताओं के लिए स्टार्टअप सहायता योजना शुरू करना। वरिष्ठ अधिवक्ताओं के लिए सज़्मान और चिकित्सा सुविधा का विस्तार। डिजिटल लॉ लाइब्रेरी एवं ईफाइलिंग सपोर्ट सिस्टम की स्थापना। अधिवक्ता शत्रुहन सिंह साहू की यह विजय धमतरी सहित पूरे अधिवक्ता समाज के लिए प्रेरणा बनकर सामने आई है और उनके विजन से विधिज्ञ समुदाय में नई ऊर्जा का संचार देखा जा रहा है।

टमाटर के भरपूर उत्पादन से किसान सुरेश सिन्हा को मिला बहुत फायदा

राजनांदगांव। प्रगतिशील किसान आधुनिक पद्धति से खेती किसानी का लाभ ले रहे हैं। शासन की कृषिहितैषी योजनाओं के कारण तथा असीम संभावनाओं को देखते हुए जिले के किसानों का रूझान टमाटर एवं अन्य उद्यानिकी फसलों में बढ़ा है। डोंगरगढ़ विकासखंड के ग्रा गातापारखुर्द के किसान सुरेश सिन्हा को टमाटर की खेती से बहुत फायदा मिला है। किसान सुरेश सिन्हा के जीवन में समृद्धि आयी है। किसान सुरेश सिन्हा ने बताया कि उन्होंने पॉली हाऊस में टमाटर की माल्या वैरायटी की फसल लगायी है, जिसकी अच्छी कीमत मिल रही है। 700 से 800 प्रति कैरेट के हिसाब से बाजार में इसकी बिक्री हो रही है। मार्केट में टमाटर की बहुत डिमांड है। यहां का टमाटर कोरबा, कोलकाता, उज़र प्रदेश, ओडिशा सहित स्थानीय स्तर पर भी भेजा जा रहा है। जिससे लगभग 2 लाख 35 हजार रूपए का फायदा हुआ है। उन्होंने कहा कि अनुकुल जलवायु, मिट्टी, खाद एवं देखरेख से टमाटर की बेहतरीन फसल हुई और टमाटर के पौधों को स्टिक सपोर्ट दिया गया है। उन्होंने कहा कि पाली हाऊस में उचित तापमान पर मल्चिंग विधि से टमाटर की खेती करने से लाभ मिला है। राष्ट्रीय बागवानी मिशन अंतर्गत संरक्षित खेती के तहत पॉली हाऊस के लिए उन्हें 17 लाख रूपए शासन की ओर से अनुदान मिला है। पॉली हाऊस की कुल लागत 34 लाख रूपए रही। सज़्जी स्टोरेज के पैक हाऊस के लिए शासन द्वारा 2 लाख रूपए का अनुदान प्राप्त हुआ है। दवाई के छिड़काव के लिए स्ट्रिप मशीन के लिए सरकार से 50 प्रतिशत अनुदान प्राप्त हुआ हैं। उनके पास 15 एकड़ जमीन है। जिसमें 8 एकड़ में धान तथा 7 एकड़ में सज़्जी की फसल ले रहे है। इस वर्ष लौकी का उत्पादन बहुत अच्छा रहा। लगभग 1.5 एकड़ में 35 टन लौकी का उत्पादन हुआ। जिससे 50 प्रतिशत की शुद्ध आमदनी हुई। उन्होंने बताया कि पॉली हाऊस में टमाटर के साथ खाली जगह में मिश्रित खेती के रूप में फूलगोभी, नवलगोल, प्याज, मूली की भी सज़्जी लगायी है। किसान श्री सुरेश सिन्हा ने कहा कि धान के बदले सज़्जी की खेती से बहुत लाभ मिल रहा है। इसमें कम पानी और अच्छा उत्पादन हो जाता है। एक वर्ष में तीन से चार सज़्जी की फसल ले सकते है। वही धान की तुलना में तीन से चार गुना अधिक आमदनी होती है। उन्होंने बताया कि उद्यानिकी विभाग से तकनीकी जानकारी एवं अन्य मार्गदर्शन निरंतर प्राप्त हो रहा है। किसान सुरेश सिन्हा ने कहा कि शासन की योजनाओं का लाभ लेकर जीवन में परिवर्तन आया है और उन्नति हुई है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं मुज़्यमंत्री विष्णु देव साय को शासन की योजनाओं के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

एनआईटी रायपुर में पाँचवें जनजातीय गौरव वर्ष का गरिमामय समापन

रायपुर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रायपुर ने आज पाँचवें जनजातीय गौरव वर्ष के समापन सत्र का भव्य एवं गरिमामय आयोजन किया। कार्यक्रम में भारत की आदिवासी सांस्कृतिक धरोहर, सामाजिक योगदान तथा स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी नायकों की भूमिका को विशेष रूप से स्मरण किया गया। समारोह में बड़ी संज़्या में गणमान्य अतिथि, संकाय सदस्य, कर्मचारी और छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे, जिससे परिसर में उत्साह और सज़्मान का माहौल रहा। समारोह के मुज़्य अतिथि छज़ीसगढ़ जनजातीय पारंपरिक स्वास्थ्य एवं औषधीय पादप बोर्ड के अध्यक्ष, विकास मरकाम थे। मुज़्य वक्ता के रूप में सामाजिक कार्यकर्ता वैभव सुरांगे ने उपस्थित जनों को संबोधित किया। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) रायपुर के निदेशक (प्रभारी) डॉ. समीर बाजपेयी, कुलसचिव डॉ. एन. डी. लोंढे, तथा वरिष्ठ संकाय सदस्य— अनुराग जैन, डॉ. आशुतोष मंडावी, डॉ. मीना मुर्मू, डॉ. निशा नेताम, डॉ. सी. के. ठाकुर, डॉ. अनुज शुज़्ला, डॉ. सी. जटोथ, डॉ. देबोराज मुचारे और डॉ. अनिल मांझी— कार्यक्रम में उपस्थित रहे। समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई, जिसके बाद नृत्यम ज़्लब द्वारा आकर्षक आदिवासी नृत्य प्रस्तुत किया गया। आदिवासी समुदायों के छात्रों ने भी छज़ीसगढ़ी आदिवासी नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी। स्वागत भाषण में डॉ. सुकेश्नी तिर्की ने भारत की आदिवासी संस्कृति की समृद्ध परंपराओं और विरासत का उल्लेख करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। कुलसचिव डॉ. एन. डी. लोंढे ने भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में मनाए जाने वाले जनजातीय गौरव वर्ष के महत्व पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को आदिवासी संस्कृति के सज़्मान और संरक्षण के लिए प्रेरित किया। निदेशक (प्रभारी) डॉ. समीर बाजपेयी ने कहा कि आदिवासी समुदायों के पास औषधीय पौधों और प्राकृतिक संसाधनों का अद्वितीय ज्ञान है, जिससे समाज को निरंतर लाभ मिलता रहा है। उन्होंने प्रकृति-सज़्मत जीवन शैली अपनाने का संदेश दिया और आयोजन समिति की सराहना की। मुज़्य वक्ता वैभव सुरांगे ने कहा कि भारत के कई ऐतिहासिक नगरों और क्षेत्रों के विकास की नींव आदिवासी शासकों ने रखी थी। उन्होंने वर्ष 2021 में भारत सरकार द्वारा 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस घोषित किए जाने को आदिवासी गौरव के लिए ऐतिहासिक कदम बताया। उन्होंने तिलका मांझी, वीर नारायण सिंह और अन्य आदिवासी नायकों के योगदान को याद किया। मुज़्य अतिथि विकास मरकाम ने कहा कि लज़्बे समय तक आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों की गाथाएँ इतिहास के हाशिये पर रहीं, इसलिए जनजातीय गौरव वर्ष का आयोजन इन गुमनाम नायकों को उचित सज़्मान देने की दिशा में महत्वपूर्ण है। उन्होंने शहीद वीर नारायण सिंह और गुंडाधुर जैसे नायकों की कहानियों को व्यापक स्तर पर पहुँचाने के प्रयासों की जानकारी भी साझा की।समारोह में अकादमिक उत्कृष्टता प्राप्त करने वाले आदिवासी छात्रों और जनजातीय गौरव वर्ष के अंतर्गत आयोजित प्रश्नोज़री, चित्रकला आदि प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सज़्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ. निशा नेताम के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

ट्रायबल यूथ हॉस्टल, नई दिल्ली के दो छात्र यूपीएससी 2025 के साक्षात्कार के लिए चयनित

रायपुर। संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा मुज़्य परीक्षा 2025 के घोषित परिणामों में राजीव युवा उत्थान योजना अंतर्गत द्वारका, नई दिल्ली में संचालित ट्रायबल यूथ हॉस्टल के दो छात्र साक्षात्कार हेतु चयनित हुए हैं। दोनों ही छात्र सामान्य पृष्ठभूमि से आते हैं। इन्होंने ट्रायबल यूथ हॉस्टल में रहकर वहां के अनुशासन एवं वहां प्रदाय की जा रही सुविधाओं का उपयोग करते हुए कड़ी मेहनत एवं लगन द्वारा यह सफलता प्राप्त की है। मुज़्यमंत्री विष्णु देव साय सहित आदिम जाति विकास मंत्री रामविचार नेताम, अनुसूचित जाति विकास मंत्री गुरू खुशवंत साहेब, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंज़्यक विकास मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, प्रमुख सचिव सोनमणि बोरा एवं आयुक्त डॉ. सारांश मिज़र ने सफल विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है। सफल छात्रों में मुंगेली जिले के हरविंदर सिंह सामान्य कृषक पृष्ठभूमि से हैं। पिता का मुज़्य व्यवसाय कृषि है। विषम परिस्थितियों के बावजूद हरविंदर ने कड़ी मेहनत और लगन से एनआईटी, रायपुर से इलेज़्ट्रॉनिक एवं टेलीकज़्युनिकेशन इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूर्ण की। उसके बाद आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विभाग द्वारा संचालित राजीव युवा उत्थान योजना अंतर्गत ट्रायबल यूथ हॉस्टल, नई दिल्ली में प्रवेश प्राप्त कर वर्तमान में अध्ययन कर रहे हैं। इसी प्रकार बरमकेला, रायगढ़ जिले के प्रकाश पटेल भी सामान्य पृष्ठभूमि से आते हैं। इनके पिता रायगढ़ में शासकीय विभाग में सहायक ग्रेड-3 के पद पर पदस्थ हैं। प्रकाश पटेल आईआईटी, रुड़की से सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात ट्राइबल यूथ हॉस्टल में रहकर सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। विदित हो कि राजीव युवा उत्थान योजना अंतर्गत दिल्ली में संचालित ट्राइबल यूथ हॉस्टल के माध्यम से छज़ीसगढ़ राज्य के अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रतिभावान अज़्यर्थियों को संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी हेतु दिल्ली स्थित इज़्पैनल्ड कोचिंग संस्थाओं में प्रवेश दिलाकर प्रशिक्षण हेतु आवश्यक सुविधाएं उपलज़्ध करायी जाती हैं। छात्रों को कोचिंग हेतु 2 लाख (अंग्रेज़ी माध्यम) एवं 1.5 लाख (हिंदी माध्यम) की सहायता की जाती है। दिल्ली में रहने हेतु हॉस्टल सुविधा एवं प्रति माह 12000 रुपये की राशि स्टाइपेंड के रूप में दिया जाता है। उक्त योजना वर्ष 2013-14 से संचालित है। पूर्व में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी हेतु कुल 50 सीट एवं ड्रॉपर/रिपीटर बैच अंतर्गत 15 अन्य सीट स्वीकृत थीं। वर्ष 2024-25 में युवाओं को परीक्षा की तैयारी हेतु अधिकाधिक अवसर प्रदान करने की दृष्टि से अतिरिक्त 135 सीटों की वृद्धि करने से वर्तमान में कुल 200 सीट स्वीकृत हैं। वर्ष 2025-26 में कुल 165 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। अब तक इस योजना के माध्यम से 04 आई.आर.एस. 05 सहायक कमाण्डेंट 13 डिप्टी कलेज़्टर, 12 उप पुलिस अधीक्षक, 19 नायब तहसीलदार एवं 111 अन्य पदों (एसीएफ, सीईओ, लेखाधिकारी, फारेस्ट रेंजर, एसएएसओ) पर अज़्यर्थियों का चयन हुआ है। इस प्रकार अब तक कुल 164 अज़्यर्थी विभिन्न पदों पर चयनित होकर कार्यरत हैं।

सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती पर यूनिटी मार्च का आयोजन

रायपुर। भारत रत्न लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर रायपुर में आज भव्य यूनिटी मार्च का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुज़्य अतिथि के रूप में रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई जिसके पश्चात हरी झंडी दिखा कर यूनिटी मार्च की शुरुआत की गई। कार्यक्रम में विद्यार्थियों, जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, कर्मचारियों और नागरिकों ने 'रन फॉर यूनिटी' के संकल्प के साथ राष्ट्र की एकता और अखंडता बनाए रखने का संकल्प दोहराया। इस अवसर पर नशामुक्ति एवं स्वदेशी की शपथ भी दिलाई गई। इस अवसर पर सांसद श्री अग्रवाल ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल ने राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, सरदार पटेल ने सभी रियासतों को जोड़ने का सशक्त कार्य किया।

उन्हें याद करते हुए 'एक भारत श्रेष्ठ- सर्वश्रेष्ठ भारत' में आज एकता मार्च निकाला जा रहा है। उन्होंने पदयात्रा में शामिल लोगों से अनुरोध किया कि पदयात्रा के दौरान पूर्ण अनुशासन का पालन करें, सड़क के एक निश्चित हिस्से पर चलें, और यातायात को व्यवस्थित रखने में मदद करें। श्री अग्रवाल ने सबको यूनिटी मार्च की सफलता के लिए शुभकामनाएं भी दीं। यह पदयात्रा शासकीय जे.आर. दानी शाला से प्रारंभ होकर कालीबाड़ी चौक, कोतवाली चौक, आजाद चौक, तात्यापारा, राठौर चौक, गुरुनानक चौक, स्टेशन रोड, फफाडीह चौक, पीली बिल्डिंग, पाटीदार भवन होते हुए सरदार वल्लभभाई पटेल चौक, टिंबर मार्केट में संपन्न हुई। प्रमुख चौकों पर महापुरुषों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण भी किया गया एवं सभी महापुरुषों को नमन किया गया।

पदयात्रा में शामिल चौक पर आम लोगों द्वारा पुष्पवर्षा कर अभिनन्दन किया गया व स्कूली बच्चों द्वारा भारत माता की जय, वंदे मातरम, सरदार वल्लभ भाई पटेल अमर रहे का जयघोष किया गया। इस अवसर पर उच्च शिक्षा मंत्री टंकराम वर्मा, कौशल विकास तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार मंत्री गुरु खुशवंत साहेब, महापौर मीनल चौबे, विधायक राजेश मूणत, सुनील सोनी, मोतीलाल साहू, पुरंदर मिश्रा, इंद्रकुमार साहू, अनुज शर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष नवीन अग्रवाल, जिला पंचायत उपाध्यक्ष संदीप यदु, निगम आयुक्त श्री विश्वदीप, जिला पंचायत सीईओ कुमार बिश्वरंजन, एडीएम उमाशंकर बंदे, डीईओ हिमांशु भारती, जिला खेल अधिकारी प्रवेश जोशी, माय भारत के अधिकारी, कर्मचारी, वॉलंटियर्स सहित बड़ी संज़्या में शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित रहे

छज़ीसगढ़ में शीतलहर का प्रकोप जारी: रायपुर समेत 12 जिलों में 'येलो अलर्ट'

रायपुर। छज़ीसगढ़ में पिछले कुछ समय से कड़ाके की ठंड पड़ रही है। प्रदेश के कई जिलों में तापमान 10 डिग्री से भी कम हो गया है। उज़र-पूर्वी दिशा से आ रही शुष्क और ठंडी हवाओं का असर पूरे प्रदेश में दिख रहा है। राजधानी रायपुर में भी इस साल कड़ाके की ठंड पड़ रही है। राजधानी रायपुर समेत कई अन्य जिलों में घना कोहरा छा रहा है और पूरे दिन ठंड का एहसास हो रहा है। इसी बीच मौसम विभाग ने ठंड को ले कर येलो अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग ने अगले कुछ दिनों कुछ इलाकों में शीतलहर चलने की संभावना जताई है। मौसम विभाग के अनुसार, उज़र भारत से आ रही ठंडी हवाओं के कारण छज़ीसगढ़ में मौसम में लगातार बदलाव हो रहे हैं। मौसम विभाग ने राजधानी रायपुर, सरगुजा, राजनांदगाव, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही, बिलासपुर कोरिया, मनेंद्रगढ़, चिरमिरी, भरतपुर, जशपुर, सूरजपुर और बलरामपुर जिले में शीत लहर चलने की संभावना जताई है। मौसम विभाग ने इन जिलों में शीत लहर चलने की संभावना जताई गई है .

Printed, Published,Edited, & Owned by Prakash Kumar Dhal, Printed at Promodini Publication, Main road , Chhend colony , Rourkela-15 & Published at ECR-73, Chhend Colony, Rourkela-15, Editor : Prakash kumar Dhal, Email:kalingasamachar@gmail.com , Mob: 9439951525, Ph. 0661-2646999

ओडिशा समाचार

कलिंग समाचार | राउरकेला, रविवार 30 नवंबर 2025 | पृष्ठ-6

कटक में बढ़ा पीलिया का प्रकोप, दर्जनों बच्चे संक्रमित

कटक २९/११ (संवाददाता): ओडिशा के कटक जिले के बड़ंबा ज़्लॉक के अंतर्गत गोविंदपुर गांव में पीलिया का प्रकोप तेजी से फैल रहा है। अब तक दर्जनों बच्चे इसकी चपेट में आ चुके हैं और 14 बच्चों को मणिबंध स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है।स्वास्थ्य विभाग ने स्थिति की गंभीरता को देखते हुए विशेष चिकित्सा दल गांव में भेजा है और संक्रमितों के इलाज के साथ-साथ रोकथाम के प्रयास भी शुरू कर दिए हैं।

स्वास्थ्य विभाग के सूत्रों के अनुसार, गांव में पीलिया के पहले मामले की पुष्टि के बाद 33 ग्रामीणों के रक्त नमूने जांच के लिए भेजे गए थे। इनमें से 14 बच्चों में संक्रमण की पुष्टि हुई। इसके तुरंत बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया और गांव में एक विशेष स्वास्थ्य टीम तैनात की गई। प्राथमिक जांच में सामने आया है कि मणापुर पंचायत के अंतर्गत पेयजल की आपूर्ति करने वाली पाइपलाइनों में लीकेज के कारण दूषित पानी आपूर्ति में मिल रहा है, जिससे संक्रमण फैलने की आशंका जताई जा रही है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि उन्होंने शुरू में बुखार, थकावट और बदन दर्द जैसे लक्षण देखे थे, जिसके बाद अस्पताल में जांच कराई गई। स्थानीय निवासी चैतन्य राउत ने बताया कि हमें शुरुआत में पीलिया की कोई जानकारी नहीं थी।

जब बच्चों की तबीयत बिगड़ने लगी तो हम उन्हें अस्पताल ले गए, जहां पीलिया की पुष्टि हुई। इसके बाद गांव में यह बीमारी तेजी से फैली। एक अन्य ग्रामीण सनंदा बेहरा ने कहा है कि जब जिले के विभिन्न अस्पतालों में तीन बच्चों में पीलिया की पुष्टि हुई, तब हमने स्वास्थ्य विभाग को सूचना दी।

शनिवार से ही गांव में स्वास्थ्य विभाग की टीमें सक्रिय हो गई हैं।स्वास्थ्य अधिकारियों ने बताया कि गांव में जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है और लोगों को उबालकर या फिल्टर किया हुआ पानी पीने की सलाह दी गई है। विभाग ने पेयजल आपूर्ति विभाग को भी लीकेज की जांच कर तत्काल मरज़्मत के निर्देश दिए हैं।गांव में अभी भी डर का माहौल बना हुआ है, हालांकि स्वास्थ्य विभाग द्वारा किए जा रहे त्वरित प्रयासों से लोगों को राहत की उज़्मीद है।

ऊर्जा प्रबंधन विभाग में तत्काल मान्यता योजना के अंतर्गत ठेका श्रमिकों को किया गया पुरस्कृत

राउरकेला २९/११ (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र के ऊर्जा प्रबंधन विभाग में तत्काल मान्यता योजना के अंतर्गत एक पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुज़्य महाप्रबंधक (ईएमडी),श्री पी. एस. कन्नन ने समारोह की अध्यक्षता की और विभिन्न एजेंसियों के 10 ठेका श्रमिकों को पुरस्कार प्रदान किए। इस अवसर पर महाप्रबंधक (ईएमडी), श्री ए. एस. खाखा, महाप्रबंधक (ईएमडी), श्री के. के. बारला, वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन-सीएलसी), सुश्री संगीता एम. सिंदूर, तथा ईएमडी के अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी, विभिन्न एजेंसियों के संबंधित प्रतिनिधि उपस्थित थे।

श्री कन्नन ने सभी पुरस्कार विजेताओं की उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रशंसा की और अपने-अपने कार्य क्षेत्रों में गुणवज़ा, लागत और सुरक्षा के महत्व पर बल दिया तथा उपस्थित सभी लोगों को सक्रिय रूप से कार्य करने और लक्ष्यों से आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। उल्लेखनीय रूप से, संविदा कर्मचारियों को सीपीपी-1 के निकट स्थापना के बाद पहली बार 2600 मिमी व्यास की एमबी पाइपलाइन को बदलने और एमआरडी चौक के निकट 200 मिमी ऑज़्सीजन लाइन के स्थानांतरण के लिए पुरस्कृत किया गया।वरिष्ठ प्रबंधक, (ईएमडी), श्री हिमांशु मिश्रा ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया।

हाथी दांत की तस्करी करने वाले 5 लोग गिरफ्तार, 4 दांत बरामद

बड़बिल २९/११ (संवाददाता): वन्यजीव अपराध के विरुद्ध लड़ाई में एक बड़ी सफलता प्राप्त करते हुए ज़्योंझर वन प्रभाग ने हाथी दांतों के अवैध कज़्जे और व्यापार में संलिप्त पांच व्यक्तियों को सफलतापूर्वक गिरज़्तार किया है।शुक्रवार को ज़्योंझर वन प्रभाग कार्यालय में डीएफओ धनराज एचडी ने बताया कि उक्त अभियान की योजना और क्रियान्वयन ज़्योंझर वन प्रभाग और सिमलीपाल वन्यजीव खुफिया नेटवर्क द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।प्रभागीय वन अधिकारी ज़्योंझर के मार्गदर्शन में संचालित अभियान के तहत विश्वसनीय खुफिया सूचनाओं के आधार पर गुरुवार को एक विशेष कार्रवाई दल का गठन किया गया। जिसमें एसीएफ सुदीप्त पंडा, रेंज अधिकारी नायककांत साहू, भुइयां जुआंगा पिढ़ा रेंज, वनपाल कालिंदी, सी. सामल, ज्योतिर्मयी पटनायक, सरोज कुमार पात्रा, वन रक्षक सुब्रत पात्रा, मित्रभानु नायक, और मिलिरानी दाश शामिल थे और सूचना मिली कि भुइयां जुआंगा पिराह रेंज के सुआकाटी सेज़्शन के बांसपाल बीट के अंतर्गत बालीबेड़ा गांव में हाथी दांतों का सौदा होने वाला था।सूचना मिलते ही टीम ने एसीएफ द्वारा जारी तलाशी वारंट प्राप्त किया और शुक्रवार सुबह लगभग 10 बजे टीम ने बालीबेड़ा गांव में गंगाधर पात्रा के परिसर में छापा मारा और पांच व्यक्तियों के पास से लगभग पांच किलोग्राम वजन के चार हाथी दांत पाए गए।टीम द्वारा हाथियों के दांतों को जज़्त करने के बाद 41 वर्षीय गंगाधर पात्रा ग्राम बालीबेड़ा, थाना नायकोट, जिला ज़्योंझर निवासी, 25 वर्षीय नारद मुंडा, गांव जंभिरिपोसी, थाना नायकोट, जिला ज़्योंझर निवासी, 49 वर्षीय केदारनाथ पात्रा ग्राम भलियाडीहा थाना ररुआं, जिला मयूरभंज निवासी, 45 वर्षीय कृष्ण चंद्र मुंडा, ग्राम जोड़ापोखरी, थाना चंपुआ, जिला ज़्योंझर निवासी, 30 वर्षीय घासीराम मुंडा ग्राम बारदापाल, थाना सदर (रायसुआं), जिला ज़्योंझर निवासी को मौके से गिरज़्तार किया गया। डीएफओ धनराज एच डी ने बताया कि हाथी के दांतों के अतिरिक्त अपराध में प्रयुक्त चार मोबाइल फोन और दो मोटरसाइकिलें भी जज़्त की गईं।

ओडिशा सीमा पर घुसपैठ को लेकर पश्चिम बंगाल सरकार को कड़ी चेतावनी दी सुरेश पुजारी ने

भुवनेश्वर २९/११ (संवाददाता): राजस्व मंत्री सुरेश पुजारी ने ओडिशा सीमा पर घुसपैठ को लेकर पश्चिम बंगाल सरकार को कड़ी चेतावनी दी है। मंत्री सुरेश पुजारी ने कहा है कि पश्चिम बंगाल एक असज़्य सरकार है। उन्होंने आगे कहा कि अगर जरूरत पड़ी तो ओडिशा पश्चिम बंगाल को भी पाठ पढ़ाएगा और रास्ता दिखाएगा। राजस्व मंत्री पुजारी बालेश्वर जिले के उदयपुर एवं सहाबाजीपुर में घुसपैठ पर प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ओडिशा की सीमाएंए छज़्ीसगढ़ए झारखंड और पश्चिम बंगाल के साथ हैं। मैंने जिले का दौरा किया है और अधिकारियों के साथ चर्चा की है। छज़्ीसगढ़ और झारखंड के साथ ज्यादा समस्याएं नहीं हैंए लेकिन हैरानी की बात यह है कि ओडिशा बनने के बाद से आज तक बालेश्वर में सीमा चिह्नित नहीं हो पाई है। राजस्व मंत्री ने कहा कि राजस्व विभाग पश्चिम बंगाल सरकार के साथ संपर्क में है। शांतिपूर्ण माहौल में सीमाओं का पता लगाया जाएगा। इसको लेकर चर्चा शुरू हो गई है। पश्चिम बंगाल के राजस्व अधिकारी के साथ.साथ ओडिशा के राजस्व अधिकारी क्षेत्र का दौरा करके सीमा की पहचान करेंगे। यह सरकार बिना किसी विवाद के सीमाओं के सीमांकन की समस्या का समाधान करेगी।

पश्चिम बंगाल सरकार एक असज़्य सरकार है। पश्चिमी बंगाल देश में समस्याएं पैदा कर रहा है। पश्चिम बंगाल सरकार ने नागरिकता कानून लागू नहीं किया हैए वह वर्षों से आलू को ओडिशा पहुंचने से रोककर समस्याएं पैदा कर रहे हैं।बंगाल में आयुष्मान भारत योजना लागू नहीं की। यह लोकतंत्र का दुर्भाग्य है। पश्चिम बंगाल सरकार विवाद पैदा करने के लिए काम करती है। पश्चिम बंगाल झगड़े पैदा करने का काम कर रहा है। उन्हें पढ़ाई करने की जरूरत है। राजस्व मंत्री सुरेश पुजारी ने कहा कि ओडिशा सरकार उन्हें रास्ता सिखाएगी। जबरदस्ती की परवाह कौन करता हैघ् अगर पश्चिम बंगाल सरकार खूंटा लगाएंगेए तो ओडिशा के लोग उन्हें उखाड़ देंगे।

भुवनेश्वर सीबीआई को 7 साल बाद मिली बड़ी सफलता

चिटफंड घोटाले के आरोपी को तमिलनाडु से किया गिरफ्तार

भुवनेश्वर २९/११ (संवाददाता):ओडिशा में लंबे समय से चल रही चिटफंड घोटाले की जांच के तहत एक बड़ी सफलता में केंद्रीय अन्वेषण ज़्यूरो (सीबीआई) ने शिवकुमार गंगाधरण को गिरज़्तार किया है, जो कई वर्षों से फरार था।उसे तमिलनाडु के कूनूर से भुवनेश्वर सीबीआई कार्यालय की एक टीम ने गिरज़्तार किया। शिवकुमार गंगाधरण, राइटमैज़्स टेज़्नोट्रेड इंटरनेशनल लिमिटेड का पूर्व निदेशक था और वह 2018 से गिरज़्तारी से बचता फिर रहा था।सीबाअई अधिकारियों के अनुसार, वह बार-बार अपना ठिकाना बदलता रहा, ताकि जांच एजेंसियों को गुमराह कर सके और उसने अपनी असली पहचान छिपाने के लिए फर्जी पहचान पत्रों का इस्तेमाल किया। विश्वसनीय खुफिया जानकारी मिलने के बाद, सीबीआई टीम ने तमिलनाडु में एक गुप्त ऑपरेशन शुरू किया और अंततः उसे कूनूर में पकड़ लिया, जहां वह एक नकली नाम से रह रहा था। गंगाधरण के खिलाफ चिटफंड धोखाधड़ी का मामला 2014 से जुड़ा है, जब कई निवेशकों ने उसके खिलाफ बड़े पैमाने पर आर्थिक धोखाधड़ी की शिकायतें दर्ज कराई थीं। आरोप है कि उसकी कंपनी ने लोगों से भारी रकम यह कहकर ली थी कि उन्हें ऊंचा मुनाफा मिलेगा।इसके बाद साल 2019 में कई बार समन जारी होने के बावजूद जब वह अदालत में पेश नहीं हुआ और उसका पता नहीं चला, तब अदालत ने उसे आधिकारिक रूप से अपराधी घोषित कर दिया था।गिरज़्तारी के बाद आरोपी को भुवनेश्वर लाया गया और विशेष सीबीआई अदालत में पेश किया गया, जहां से उसे 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।अधिकारियों ने बताया कि आगे की पूछताछ में घोटाले के दायरे और उन लोगों की पहचान करने की कोशिश की जाएगी, जिन्होंने उसे फरारी के दौरान सहायता दी। यह गिरज़्तारी ओडिशा में विज़्तीय धोखाधड़ी और चिटफंड घोटालों के खिलाफ सीबीआई की कार्रवाई में एक बड़ी सफलता मानी जा रही है।एजेंसी ने यह दोहराया है कि वह सभी दोषियों को न्याय के कटघरे तक लाने के लिए प्रतिबद्ध है, चाहे उन्हें पकड़ने में जितना भी समय ज़्यों न लगे। सूत्रों के अनुसार, अब सीबीआई की प्राथमिकता घोटाले से निकाले गए पैसों की बरामदगी और पीड़ितों को मुआवजा दिलाने पर होगी। मामले की आगे जांच जारी है।

नशे के मकड़जाल में फंस रहा युवा वर्ग

राजगांगपुर २९/११ (संवाददाता): शहर के युवा नशे के मकड़जाल में फंसकर बर्बादी के कगार पर पहुंच रहे हैं। इससे उनकी सेहत तो खराब हो ही रही है। साथ ही उनका सामाजिक स्तर भी गिरता जा रहा है।

ओडिशा के बुनकरों और बुनाई का उत्सव मनाते हुए-दीपिका हस्तकरघा

राउरकेला २९/११ (संवाददाता): देश भर में पालित राष्ट्रीय हस्थकरघा दिवस के साथ इस्पात नगरी राउरकेला के हृदयस्थल में परिवर्तन की एक उल्लेखनीय कहानी रची जा रही है—एक ऐसी कहानी जहाँ परज़्परा के धागों को सशक्तिकरण और अवसर के ताने-बाने में बुना जा रहा है। इस सबके बीच, राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) द्वारा अपने सीएसआर पहल के तहत स्थापित दीपिका हस्त करघा, एक जीवंत हस्थकरघा बुनाई इकाई है जिसे क्षेत्र के प्रमुख परोपकारी संगठनों में से एक, दीपिका महिला संघति द्वारा देखभाल और प्रतिबद्धता के साथ सँवारा एवं सींचा जा रहा है। दीपिका महिला जागृति संस्थान, सेज़्टर-2 के परिसर में स्थित, यह केंद्र अत्याधुनिक हस्थकरघा उपकरणों और सुविधाओं से सुसज्जित है, जिसमें प्री-लूम उपकरण, फ्रेम लूम और पिट लूम आदि शामिल हैं। 2 अज़्टूबर 2012 में अपने उद्घाटन के बाद से, यह केंद्र आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के जीवन में बदलाव ला रहा है-जिनमें से कई के पास कभी शिक्षा या तकनीकी कौशल तक की पहुँच नहीं थी। इन वर्षों में, इन महिलाओं ने, जिनमें से कई ने पहले कभी करघे को हाथ नहीं लगाया था, हस्थकरघा बुनाई की जटिल कला में महारत हासिल कर ली है। धागा लपेटने की मूल बातें सीखने से लेकर जटिल डिज़ाइन वाली सूती और रेशमी साड़ियाँ एवं कपड़े बनाने तक का उनका सफ़र किसी सपने से कम नहीं है।प्रशिक्षण अवधि के दौरान प्रत्येक महिला को मासिक वजीफा मिलता है, जिससे उन्हें आत्मविश्वास और क्षमता बढ़ने के साथ-साथ खुद को सहारा देने में मदद मिलती है। दीपिका हस्तकरघा के उत्पाद सेज़्टर-5 मार्केट में स्थापित एक समर्पित दुकान %दीपिका हाउस% के साथ-साथ विभिन्न प्रदर्शनियों में भी बेचे जा रहे हैं।राष्ट्रीय हस्थकरघा दिवस के उपलक्ष्य में 7 अगस्त, 2025 को दीपिका हस्तकरघा में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दीपिका महिला संघती की अध्यक्षा श्रीमती नम्रता वर्मा ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर डीएमएस की सभी उपाध्यक्षाएँ, श्रीमती प्रभाती मिश्र, महाप्रबंधक प्रभारी (सीएसआर), सुश्री मुनमुन मित्रा, उप महाप्रबंधक (सीसआर), श्री टी बी टोप्पो, डीएमएस की सचिव, श्रीमती सारिका कुमार, डीएमएस के शासी निकाय के सदस्य और हस्थकरघा केंद्र के प्रशिक्षु उपस्थित थे। इस अवसर पर एक फैशन शो का आयोजन किया गया जिसमें प्रशिक्षुओं ने हस्तकरघा इकाई में बनी साड़ियों का प्रदर्शन किया। प्रतिभागियों के बीच हस्थकरघा कपड़े पर आधारित एक प्रश्नोज़्ारी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। समारोह के उपलक्ष्य में एक केक काटा गया। श्रीमती सारिका कुमार ने कार्यक्रम का सञ्चालन किया ढ्ढ